–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

मार्च, 2003 वर्ष 2 अंक 1

क़त्ले हुसैन (रज़ि०)

जिस ने भी हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया या उनके क़त्ल में मदद की या उनके क़त्ल से राज़ी हुआ उस पर अल्लाह की, फिरिश्तों की और तमाम लोगों की लानत हो। अल्लाह तआला न उनके क़ातिलों के अज़ाब को दूर करेगा और न उसका बदल क़बूल करेगा।

(इब्नि तैमिया)

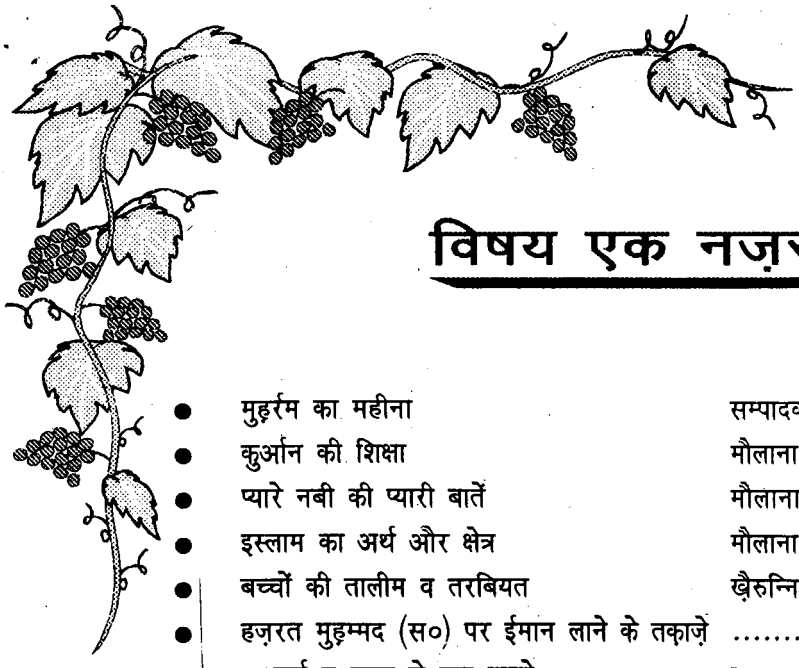

विषय एक नज़र में

- मुहर्रम का महीना — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- इस्लाम का अर्थ और क्षेत्र — मौलाना अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी (रह०) 8
- बच्चों की तालीम व तरबियत — खै़रुन्निसा बेहतर 11
- हज़रत मुह़म्मद (स०) पर ईमान लाने के तक़ाज़े — 12
- सच्चाई व त्याग के कुछ नमूने — डा० मु० इज्तिबा नदवी 13
- नमाज़ की लज़्ज़त — डा० इह़तिशाम अह़मद नदवी 15
- तकबीरे मुसलसल — डा० मसऊद ह़सन उस्मानी 17
- कुर्आन की तालीम दहशत गर्दी से कोई तअ़ल्लुक नहीं — मौ० अब्दुल करीम पारीख 19
- आप की समस्याएं और उनका ह़ल — मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी 25
- जिन्नात का परिचय — अबू मर्ग़ूब 26
- बनी इस्राईल की गाय — अह़मद अ़ली नदवी 27
- परन्तु जलन नहीं जाती — अ़ब्दुल्लाह सिद्दीक़ी 28
- सच्चा राही का नया वर्ष — इदारा 29
- मैं तेरी मह़ब्बत की सदा जोत जगाऊं — मौ० मु० सानी हसनी 30
- दिल का दर्द और होमियापैथिक दवाएं — डा० एस०एम० आ़रिफ़ीन 31
- आओ उर्दू सीखें — इदारा 33
- मुहर्रमुल ह़राम इतिहास के पन्नों से — मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी 34
- इस्लामी सज़ाएं और उनकी ह़िकमत — मौ० मुह़म्मदुल ह़सनी 35
- नींद कुदरत का एक वरदान — ह़बीबुल्लाह आज़मी 36
- युवा धर्म के रक्षक — मुह़म्मद अली जौहर मुजफ्फर नगरी 37
- कुछ महत्वपूर्ण इस्लामी शहीदों की शहादत की तारीखें — डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी 38
- मिर्ज़ा गुलाम अह़मद खुद लिखता है – 39
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — मुईद अशरफ़ नदवी 40

❑❑❑

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुह़र्रम का महीना

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम का महीना हिज्री सन का पहला महीना है, हिज्री सन का चलन अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिजरते मदीना (मदीना चले जाने) के सोलहवें या सत्तरहवें वर्ष में दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के काल में सहाबा (रज़ि०) के परामर्श से हुआ मुह़र्रम का महीना उन चार महीनों में से एक है जिन को क़ुरआन ने आदर व सम्मान वाला महीना कहा है। वह महीने हैं रजब, ज़ीकअ़दा, ज़िल्हिज्जा और मुह़र्रम, इन महीनों में हमारे हुज़ूर (स०) के आने से पहले भी लोग लड़ाई झगड़ों से बचते थे क़ुरआने करीम ने भी इन को आदर वाले महीने कहा और इन में लड़ाई झगड़ों से रोका है।

आ़शूरः और उस का रोज़ा

इस महीने की १० तारीख़ बड़ी पवित्र तथा शुभ मानी गई है, इसको "आ़शूरः" का दिन कहते हैं, मुहर्रम की १० तारीख़ को बड़ी महत्वपूर्ण घटनाएं घटी हैं, उनमें से एक बड़ी वर्णनीय घटना यह घटी की इसी तिथि को अत्याचारी फ़िरऔ़न और उसकी सेना के मुक़ाबले में ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम बनीइस्राईल को उस के अत्याचारों से छुटकारा मिला था और फ़िरऔ़न और उसकी सेना को समुद्र में डुबो दिया गया था। इसकी कृतज्ञता में मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके माननेवाले १० मुह़र्रम को व्रत (रोज़ा) रखते थे। मक्के के कुरैश भी इस दिन रोज़ा रखा करते थे। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी इस दिन रोज़ा रखा और सह़ाबा (साथियों) को भी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखने का आदेश दिया, पहले यह रोज़ा अनिवार्य था परन्तु रमज़ान के रोज़े फ़र्ज होने पर यह एच्छिक हो गया लेकिन इस दिन रोज़े का बड़ा सवाब बताया गया है। अतः बहुत से मुसलमान इस दिन रोज़ा रखते हैं। कुछ लोगों का मत है कि रोज़ा रखने में १० मुहर्रम के साथ ९ या ११ को भी रोज़ा रखना चाहिए वास्तव में पहले यह रोज़ा यहूदी भी रखते थे। अतः उनसे अलगाव सिद्ध करने के लिए ऐसा किया गया था। परन्तु ज्ञात हुआ कि अब कोई यहूदी १० मुहर्रम का रोज़ा नहीं रखता अतः अब ९ या ११ के मिलाने की आवश्यकता नहीं रही। केवल १० मुह़र्रम का रोज़ा रखा जा सकता है।

एक दुखद घटना :–

सन् ६१ हिज्री की १०मुहर्रम को एक दुखद घटना घटी वह यह कि कर्बला में यज़ीद की फ़ौज ने ह़ज़रत हुसैन रजियल्लाहु अ़न्हु को शहीद कर दिया (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन)

ह़ज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम के प्रिय नवासे, उनके सहाबी ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के लाडले बेटे थे, उम्मत का हर व्यक्ति उनको दिलो जान से चाहता था।

ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि०) के देहान्त के पश्चात् जब यज़ीद तख़्त पर बैठा तो ह़ज़रत हुसैन समेत कई सहाबा ने इसको पसन्द न किया और मतभेद इतना बढ़ा और ह़ालात ऐसे पैदा

हुए कि ६१ हिज्री के पहले हफ़्ते में यज़ीद की कई हज़ार फ़ौज कर्बला के मैदान में हज़रते हुसैन के ७२ साथियों के मुक़ाबले पर आ गई, और उन को घेर लिया। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ औ़रतें और बच्चे भी थे। विवरण बहुत ही दुखदायी है। १० मुहर्रम को हज़रते हुसैन, उनके बेटों, उनके भतीजों और साथियों को शहीद कर दिया गया। अगरचे यज़ीद यहां से बहुत दूर दमिश्क में था और उसको इस घटना की सूचना बाद में पहुंचाई गई, और उसने खेद भी प्रकट किया लेकिन इस के पश्चात् उस ने जो प्रतिकिया प्रकट की उससे वह इस भयंकर अत्याचार से बचाया नहीं जा सकता और इसके दण्ड से उसका छुटकारा असम्भव है।

इस घटना से सारी उम्मत बहुत दुखी हुई और होना चाहिए तथा इस दुख को भुलाया जाना सरल नहीं, परन्तु इस से बड़े बड़े दुख भुलाए जा चुके हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम के देहान्त पर उम्मत को जो दुख हुआ उस की तुलना किसी दूसरे दुख से नहीं कि जा सकती। फिर हज़रत अबूबक्र की वफ़ात, हज़रते उ़मर की शहादत, हज़रते उसमान की शहादत, हज़रते अ़ली की शहादत, हज़रते हसन की शहादत, सय्यदुश्शुहदा हज़रते हमज़ा की शहादत, बद्र, उहद, और हुनैन में सहाबा की शहादत यह सब दुख हैं और बड़े दुख हैं, लेकिन किसी के मरने या शहीद होने पर तीन दिन से अधिक दुख का प्रकटीकरण (इज़हार) इस्लाम में रोका गया है, प्रकृतिक दुख पर मजबूरी है और उस पर कोई पकड़ नहीं।

परन्तु बड़े खेद की बात है कि कर्बला के शहीदों का दुख हर वर्ष सामूहिक ढंग से मनाने और उसका प्रकटीकरण करने की प्रथा प्रचलित हो गई यहां तक कि रोना, चिल्लाना, छाती पीटना, अलम घुमाना, ताज़िया रखना जैसी प्रथाएं चल पड़ीं इन सब की इस्लाम में गुंजाइश नहीं ।

अपनी जांच (इह़तिसाब) तथा सहयोगियों का शुक्रिया।

सर्व प्रथम मैं अपने मालिक का शुक्र अदा करता हूं जिसने अपनी कृपा से "सच्चा राही" की सेवा पर एक साल बिता लेने का अवसर दिया साथ ही नया वर्ष आरंभ करने की तौफ़ीक़ दी। हम आभारी हैं अपने आदरणीय साथियों जनाब मुह़म्मद ह़सन अन्सारी, जनाब ह़बीबुल्लाह आज़मी और जनाब मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी के कि उनके सहयोग ही से यह "सच्चा राही" विचित्र विषयों के साथ अपने समय पर निकलता रहा। हम शुक्र गुज़ार हैं श्री मसीहुज़्ज़मा साहिब के कि पर्चे की सुन्दरता में उनका बड़ा रोल है और शुक्रिया अदा करते हैं अपने पूरे स्टाफ़ का कि उनके सहयोग ही से पर्चा समय पर निकलता रहा है।

अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पढ़ने वाले अपने पत्रों तथा मीठे बोलों से हमारा साहस बढ़ाते रहे। हम आभारी हैं उन सम्मानित सज्जनों के जो हम को बहुमूल्य परामर्श प्रदान करते रहे। हम धन्यवाद देते हैं उन स्कालरों को जो अपने लाभदायक लेखों से हमारा सहयोग करते रहे।

हम इस कोशिश में बराबर रहे कि "सच्चा राही" में अच्छे से अच्छे लाभप्रद लेख प्रकाशित हों। लिखाई अच्छी हो छपाई सुन्दर हो टाइटिल आकर्षक हो इसमें हम कितने सफल रहे यह तो हमारे पाठक ही बताएंगे। परन्तु हम स्वीकार करते हैं कि अभी हमारे परचे में बड़ी कमियां हैं। हम और हमारे साथी हर परचे पर आलोचनात्मक दृष्टि (तन्क़ीदीनज़र) डालते रहे हैं और हर बार यह कहते रहे हैं कि यह ऐसा होता तो अच्छो होता और यह ऐसे होता तो बेहतर होता फिर अपने निकट हर अगला परचा पिछले से अच्छा करने की चेष्ठा करते रहे हैं तथा भविष्य में भी खूब से खूब तर की तलाश जारी रहेगी।

हम आभारी हैं उन सज्जनों के भी जिन्होंने "सच्चा राही" के ग्राहक बढ़ाने में हमको सहयोग दिया हम आश्चर्य में हैं कि साल भीतर सच्चा राही के इतने ग्राहक कैसे हो गये कि डेढ़ हज़ार छपता है और सब ख़त्म हो जाता है। लेकिन आज कल की मंहगाई के कारण अभी "सच्चा राही" स्वाश्रित (खुद कफ़ील) नहीं है। अभी तक नदवे की इन्तिज़ामिया (मैनेजमेंट) विशेषतः उसके प्रबन्धक हज़रत मौलाना मुह़म्मद राबे ह़सनी और नाज़िरे आम जनाब मौलाना मुह़म्मद ह़म्ज़ा ह़सनी की तवज्जुह से परचा बराबर अपने समय पर निकलता रहा है। अतः हम अपने हमदर्दों से ग्राहक बढ़ाने का सहयोग मांगते हैं। दो हज़ार ग्राहक हो जाने पर इन्शाअल्लाह परचा स्वाश्रित (खुद कफ़ील) हो जाएगा।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

बीवी के साथ बरताव –

फ़रमाया : अपनी बीवी में कोई कमी देखकर उससे घृणा मत करो। ध्यान दोगे तो उसमें कोई अच्छी बात भी निकल आएगी।

जो हम खुद खाएं वह बीवी को भी खिलाएं जिस स्तर का खुद पहने उसी स्तर का बीवी को भी पहनाएं। अर्थात औरतों को भी अपनी तरह का आदमी समझना चाहिए। जो अपने लिये पसन्द करें वही उनके लिए भी पसन्द करें। औरतें आमतौर से (साधारणतया) कमज़ोर दिल की होती है इसलिए रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनका बड़ा ख़याल रखते थे। एक समय सफ़र में बीवियां साथ थीं। ऊंट तेज़ी से जा रहे थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंजशा (हबशी ग़ुलाम) से कहा : देखना शीशे (अर्थात औरतें) टूटने न पाएं।

सहाबा (रज़ि०) अपनी बीवियों से बहुत महब्बत का बरताव करते थे। एक बार हज़रते हसन ने अपनी एक बीवी आइशा को किसी कारण तलाक़ दे दी। महर की रक़म भेजी तो वह उसको देख कर रो पड़ीं और कहा: 'जुदा होने वाले दोस्त के मुक़ाबिल यह बहुत ही तुच्छ चीज़ है। हज़रत हसन ने यह खबर सुनी तो वह भी रो पड़े।

रिश्तेदारों के साथ बरताव –

"व बिज़िलकुर्बा" (अन्निसा : ३६) (और नेकी करो) रिश्तेदारों के साथ।

मां बाप के पश्चात् दूसरे रिश्तेदारों का हक़ है, उनके साथ जहां तक सम्भव हो भलाई करना चाहिए। एक समय एक व्यक्ति ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : मुझे कोई ऐसी बात बताइये जो मुझे जन्नत में ले जाए। फ़रमाया खुदा की बन्दगी करो। किसी को उस का साझी न बनाओ। नमाज़ पूरी तरह अदा करो। ज़कात दो और क़राबत का हक़ अदा करो।

फ़रमाया : जो रोज़ी में वुसअ़त (अधिकता) और उम्र में बरकत चाहे वह रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव करे।

फ़रमाया : क़राबत का हक़ अदा करने वाला वह शख़्स नहीं है जो रिआयत के बदले में रिआयत करे बल्कि वह है जो क़राबत का लिहाज न करने वालों के साथ भी रिआयत करे।

सहाब–ए–किराम रिश्तेदारों के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार करते थे।

यतीमों के साथ बरताव

"वलयतामा" (अन्निसा : ३६) और नेकी करो यतीमों के साथ। जिस बच्चे का बाप मर जाए उसको यतीम कहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यतीमों के साथ भलाई करो। सख़्ती का बरताव न करो और न उनको दबाकर रखो कि उनकी उठान व बढ़ान प्रभावित हो जाए। दूसरी जगह फ़रमाया : "फ़ अम्मल् यतीम फ़ला तक़हर" (अज़्ज़ुहा) सो यतीम को दबाओ नहीं।

जो लोग यतीमों के साथ अच्छा बरताव नहीं करते उनको ख़याल करना चाहिए कि अगर वह अपने छोटे छोटे बच्चों को छोड़ कर मर जाएं और दूसरे लोग उन बच्चों के साथ इसी तरह बरताव करें तो क्या हाल हो? हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमानों का सबसे अच्छा घर वह है जिस में किसी यतीम के साथ भलाई की जा रही हो और सब से बुरा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ बुराई की जाती हो। दो उंगिलया मिला कर फरमाया : मैं और किसी यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में यूं दो उंगलियों की तरह क़रीब क़रीब होंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर किसी यतीम को साथ लिये बिना खाना न खाते थे हज़रते आइशा अपने खान्दान और अन्सार की यतीम लड़कियों को अपने घर ले जाकर पालती थीं। यतीम बच्चों के माल को अनार्जव (बद दियानती) तथा दुरुपयोग से खर्च न करना चाहिए। जिन कामों में उन यतीमों को लाभ हो उनमें ख़र्च किया जा सकता है। हज़रते आइशा यतीमों के माल को तिजारत में ख़र्च करती थीं ताकि उनका माल बढ़े।

जब तक यतीम समझदार न हो जाएं उनका माल उनको न दिया जाए बल्कि सुरक्षित रखा जाए। जब वह अपना लाभ तथा हानि जानने लगें तो उनका माल उनको दे दिया जाए।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

जन्नत में नवजवानों के सरदार

हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया हसन (रज़ि०) व हुसैन (रज़ि०) जन्नत वालों के नौजवानों के सरदार होंगे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अ़ली (रज़ि०) की महब्बत ईमान की अलामत –

हज़रत अिमरान बिन हुसैन (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि अली मेरे हैं और मैं उनका हूं और वह तमाम मोमिनों के महबूब हैं। (तिर्मिज़ी)

५०. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि०) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जिसका मैं महबूब हूं अ़ली भी उसके महबूब हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अ़ली का दर्जा

५१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) से फरमाया तुम दुन्या व आखिरत दोनों जगह मेरे भाई हो। (तिर्मिज़ी)

हज़रत खदीज़ा (रज़ि०) की फज़ीलत–

५२. उम्मुल मूमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) रिवायत करती हैं कि मैंने नबी करीम (सल्ल०) की किसी बीवी पर रश्क नहीं किया सिवाय हज़रत खदीजा (रज़ि०) के हालांकि मेरी शादी से पहले उनका इन्तिक़ाल हो चुका था मगर आप (सल्ल०) उनका कसरत से ज़िक्र फरमाते थे अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को हुक्म दिया था कि उनको मोती के बने हुए घर की ख़ुशख़बरी दे दें आप (सल्ल०) जब कोई बकरी ज़ब्ह करते तो हज़रत खदीजा (रज़ि०) की सहेलियों को इतना हदिया भेजते जो उनके लिए काफी हो जाता। (बुख़ारी)

५५. अिमरान बिन हुसैन (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया मेरी उम्मत के सबसे बेहतर लोग मेरी सदी के हैं फिर वह लोग हैं जो इनके बाद हैं (ताबअ़ी), फिर उनके बाद वह लोग हैं जो उनसे मिले हुए हैं। (तबअ़े ताबअ़ीन)

अिमरान (रज़ि०) कहते हैं कि यह याद नहीं कि पहली सदी के बाद दो बार फरमाया या तीन बार फिर ऐसे लोग (पैदा) होंगे कि बिना तलब गवाही देते फिरेंगे, खियानत करेंगे, उनमें अमानत न होगी और न उन पर एतिमाद किया जाएगा, नज़रें मानेंगे, पूरी न करेंगे और उनमें मुटापा पैदा होगा। (बुख़ारी)

५६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसअूद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया, लोगों मैं सबसे बेहतर लोग मेरी सदी के लोग हैं फिर वह जो उनके बाद आएंगे फिर उनके बाद आने वाले, फिर ऐसे लोग पैदा होंगे कि उनकी गवाही उनकी कसम से आगे होगी और क़सम गवाही को मात दे देगी। (बुख़ारी)

५७. हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया मेरे सहाबा को बुरा न कहो अगर तुममें से कोई व्यक्ति उहद पहाड़ के बराबर भी सोना खर्च करे तो (उस खर्च करने वाले) को सवाब उनके एक मुद (सेर भर) या आधा मुद्द के सवाब के बराबर भी नहीं हो सकता। (बुख़ारी)

५८. जंगे बद्र में शरीक सहाबा व फ़िरिश्तों का दर्जा –

हज़रत राफ़ेअ़ बिन रिफाअ़ फरमाते हैं, कि हज़रत जिब्रईल (अलै०) रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के पास हाज़िर हुए और कहा कि अहले बद्र को आप किन लोगों में गिन्ते हैं आप (सल्ल०) ने फरमाया (हम उनको) मुसलमानों में बहुत अफ़ज़ल समझते हैं या इसी तरह की कोई बात फरमाई हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने फरमाया यही हुक्म उन फ़िरिश्तों का है जो बद्र में शरीक थे। (बुख़ारी)

५६. जंगे बद्र और हुदैबिया में शरीक होने वालों का दर्जा–

हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया मैं पूरी उम्मीद करता हूं कि जो भी बद्र व हुदैबिया में शरीक हुए हैं वह जहन्नम में नहीं जाएंगे इन्शा अल्लाह मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क्या अल्लाह ने यह नहीं फरमाया "और तुममें से कोई भी ऐसा नहीं जिसका

गुजर उस तक न हुआ हो" रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया " क्या तुमने नहीं सुना है वह फरमाता है "फिर हम उन्हें नजात दे देंगे जो अल्लाह से डरते थे।"

मुस्लिम की एक रिवायत हज़रत उम्मे बशर से है कि "अस्हाबे शजर" में से कोई भी जहन्नम में नहीं जाएगा जिसने उसके नीचे बैअ़त की।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का दर्जा–

६१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि ने फरमाया अगर मैं (अल्लाह के सिवा) किसी को दोस्त बनाता तो अबू बक्र को बनाता लेकिन वह मेरे भाई और साथी है।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत उमर (रज़ि०) का दर्जा–

६३. हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया तुम में से पहले की उम्मतों में कुछ लोग साहिबे इलहाम हुए थे मेरी उम्मत में अगर कोई ऐसा है तो वह उमर ही हैं।

हज़रत उस्मान (रज़ि०) की हया (शर्म)–

६४. हज़रत आइशा (रज़ि०) फरमाता है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने हज़रत उस्मान (रज़ि०) के सम्बन्ध में फ़रमाया कि मैं उस व्यक्ति से क्यों न हया करूं जिससे फ़िरिश्ते हया (शर्म) करते हैं। (मुस्लिम)

हज़रत अ़ली (रज़ि०) का दर्जा–

६५. हज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने हज़रत अ़ली से फरमाया कि तुम इस बात से खुश नहीं कि तुम मेरी ओर से उस दर्जा पर हो जिस दर्जा पर हज़रत हारून (अलै०) हज़रत मूसा की ओर से थे। (बुख़ारी)

हज़रत अब्बास (रज़ि०) की बरकत से बारिश होना –

६६. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि जब लोग कहत में मुब्तला होते तो हज़रत उमर बिन खत्ताब हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के वसीले से बारिश की दुआ माँगते और कहते अल्लाह, हम तेरे दरबार में अपने नबी (सल्ल०) का वसीला इख्तियार किया करते थे और तू बारिश बरसा देता था हम अपने नबी के चचा का वसीला इख़्तियार करते हैं, तू बारिश नाजिल फरमा दे तो बारिश हो जाती थी। (बुख़ारी)

हज़रत जुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) का दर्जा –

६७. हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर नबी के मददगार होते हैं मेरे मददगार ज़ुबैर (रज़ि०) हैं। (बुख़ारी)

हज़रत तल्हा बिन अुबैदुल्लाह (रज़ि०) की कुर्बानी –

६८. हज़रत कैस बिन हाज़िम (रज़ि०) से रिवायत है कि गजव–ए–उहद के दिन मैंने हज़रत तल्हा का हाथ शल (लुंज) देखा उस हाथ से उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) की हिफ़ाजत का फर्ज़ अन्जाम दिया था। (बुख़ारी)

हज़रत अुबैदह बिन जर्राह का दर्जा–

६९. हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया हर उम्मत का एक अमीन होता है, इस उम्मत के अमीन अबू अुबैदह हैं। (बुख़ारी)

(पृष्ठ १० का शेष)

इन तमाम तत्वों को दृष्टिगत रखते हुए मानव के लिए एक ऐसी उपासना पद्धति की आवश्यकता थी जो उस के स्वभाव, पद की जिम्मेदारियों, सृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा व पद और ज़िम्मेदारी से मेल खाती हो जिसे संसार के सृजनहार ने उसके कन्धों पर डाली है।

एक तरफ़ अ़िबादत इन्सान के लिए ज़रूरी भी थी, क्योंकि यह उसकी प्रवृत्ति की मांग, उसके अस्तित्व व उद्देश्य, उसके अन्तःकरण की आवाज़, उसकी सज्जनता और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति और आत्मा की खुराक है, दूसरी तरफ यह भी जरूरी है कि यह अ़िबादत उसके शारीरिक गठन और व्यक्तित्व के अनुरूप और उसकी नाज़ुक व महत्वपूर्ण हैसियत और सृष्टि में उसके विशिष्ट स्थान के सर्वथा अनुकूल हो और उससे मेल खाती हो, और उस परिधान (लिबास) की तरह हो जो उसके शरीर पर पूरी तरह फिट आये और उस पर अच्छा लगे न तंग हो न ढीला हो न ज़ियादा ।

नमाज़ वास्तव में यही परिधान है जो ठीक–ठीक उसके अस्तित्व पर पूरा उतर रहा है और जिसमें किसी प्रकार की कोई भी कमी बेशी नज़र नहीं आती।

यह पांचों नमाज़ें (जो फ़र्ज़ की गई हैं) उन्हें निधारित समय में अदा करना जरूरी है जो अल्लाह ने निश्चित किये है। कुर्आन मजीद में इनके समय की ओर संकेत किया गया है। इन पांच नमाज़ों के लिए रकअ़तें भी निर्धारित हैं जिनकी पाबन्दी ज़रूरी है।

इस्लाम का अर्थ और क्षेत्र

मो० सैय्यद अबुल इसन अ़ली नदवी

इस्लाम रब के सामने पूरी सुपुर्दगी और अपने को बिना शर्त रब के हवाले करने का नाम है। इस्लाम धर्म पूरी ज़िन्दगी को अपने घेरे में लिए हुए है, यह एक बुनयादी सच है जो बन्दे व रब (भक्त और ईश्वर) के सम्बन्ध को समझे बिना समझ में नहीं आ सकता । हर मुसलमान रब का आज्ञाकारी बन्दा है, और उसका सम्बन्ध खुदा से स्थायी है, आम है, गहरा है और व्यापक है, भरपूर है। कुरआन मजीद में है –

अनुवाद – "ऐ ईमान वालो, इस्लाम में पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।"

(सूरेः अलबक़रः २०८)

यहां रिजर्वेशन नहीं, कि इतना आप का है और इतना हमारा, इतना देश का, इतना स्टेट का, इतना रब का और इतना ख़ानदान और क़बीले का, इतना दीन व धर्म का और इतना राजनीतिक लाभ का। इसमें जो कुछ है वह सब रब का है, यहां सब अ़िबादत ही अिबादत है। मुसलमान की पूरी ज़िन्दगी खुदा के सामने मुहताजी और दास्ता है। यहां दीन का दायरा पूरी ज़िन्दगी पर हावी है, और इसमें किसी को कोई संशोधन करने का कोई हक़ नहीं। बड़े–बड़े विद्वानों और धार्मिक नेताओं को भी इन चीजों में जो कुरआन मजीद से साबित हैं, एक शब्द, एक अक्षर, के संशोधन की इजाज़त नहीं।

अल्लाह मुताल्बा करता है, इस्लाम मुताल्बा और मांग करता है कि पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ। मैं सफाई से कहता हूं और अपना फर्ज़ समझता हूं कि साफ कहूं कि हम मुसलमानों का रहन सहन, शादी ब्याह के तरीक़े, विरासत के तरीक़े और हम मुसलमानों के मुआ़मले शरीअ़त से दूर हैं और बहुत दूर हैं। कुछ लोग तो ऐसे हैं जो अ़क़ीदे (विश्वास) में दीन के पाबन्द हैं, तौहीद (एकेशवरवाद) के बारे में उनका ज़ेहन साफ़ है, रिसालत (अल्लाह के सन्देश को उसके बन्दों तक पहुंचाने का सिलसिला पैग़म्बरी, ईशदौत्य) के बारे में, जो बुनयादी अ़क़ीदे हैं, उनके बारे में उनकी सोच और समझ साफ़ है, लेकिन अ़िबादत में कच्चे हैं। और बहुत से वह हैं जो अ़क़ीदे व अ़िबादत में पक्के हैं, लेकिन मुआ़मला और अख़लाक़, आचार व्यवहार को न पूछिये, इनमें बड़े अविश्वसनीय किसी के मुआ़मले में पड़ेंगे तो ख़ियानत (ग़बन, हेराफेरी) से न चूकेंगे, नाप तौल में कमी करेंगे, तिजारत करेंगे और उसमें साझेदारी होगी तो उसमें नाइन्साफ़ी और ख़ियानत करेंगे। अपने पड़ोसी को दुख पहुंचाएंगे। हदीस में आता है–

अनुवाद–"मुसलमान वह है जिस की ज़बान और हाथ (यातना, कष्ट, तकलीफ़) से मुसलमान सुरिक्षत रहें।"

अनुवाद – "तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसकी यातना से उसके नुक़सान से सुरक्षित न हो जाये।"

मुसलमानों का एक तबक़ा ऐसा है कि न पूछिए, उसने आचार व्यवहार को दीन से ख़ारिज कर रखा है और समझ रखा है कि बस अक़ाइद व अ़िबादत ही हैं, न मुआ़मले की सफाई न वअ़दा की पाबन्दी, न अमानत का ख़याल, न इन्साफ़ के साथ बंटवारा, कोई चीज़ नहीं। बन्दों के हक़ की अदायगी नहीं, नाते, रिश्तों और हक़दारों के बारे में बिल्कुल आज़ाद। नौकरों के साथ, मुआ़मलात में, तिजारत और ज़िन्दगी के दूसरे क्षेत्रों में भी मनमानी कार्रवाई करते हैं।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने जिन मुसलमानों को तैयार किया था वह सहाबा थे, वह दीन के पूरे अनुयायी थे, वह दीन के सांचे में ढल गये थे, उनके अक़ाइद उनकी अ़िबादत, उनके मुआ़मले, उनका आचरण उनकी रस्में, उनके आयोजन, उनकी विजय, उनकी हुकूमत व शासन व्यवस्था सब चीजें और जीवन के सब विभाग शरीअ़त के अनुसार थे।

इस्लाम में अ़क़ीदे (विश्वास) का महत्व

भक्ति और बन्दगी की बुन्याद अ़क़ीदा (विश्वास) और ईमान के सही होने पर हैं। जिसके अ़क़ीदे में ख़लल, विश्वास में विकार और ईमान में बिगाड़ हो उसकी न कोई अ़िबादत मक़बूल होगी न उसका कोई कर्म सही माना जायेगा और जिसका अ़क़ीदा दुरुस्त और ईमान सही हो उसका थोड़ा

अमल(कर्म) भी बहुत है। इसलिए सबसे पहले उन बातों को मअ़लूम करने की ज़रूरत है जिन पर अ़क़ीदा रखना, ईमान लाना और उसके अनुसार आचरण करना आवश्यक है और जिन पर विश्वास के बिना कोई व्यक्ति मुसलमान कहलाने का अधिकारी नहीं, यह वह शर्त है जो तमाम दुन्या के मुसलमानों के लिए एक समान है।

इस्लाम के आधारभूत (विश्वास) अ़क़ीदे

तौहीद अर्थात : एकेश्वरवाद का विश्वास इस्लाम का विशुद्ध और बे मेल विश्वास है। इसके अन्तर्गत भक्त और ईश्वर उपासक और उपासस्य के बीच दुआ़ और अ़िबादत के लिए किसी बिचौलिये की ज़रूरत नहीं है। इस अ़क़ीदे में न अनेक और बहुसंख्य देवताओं और मअ़बूदों (जिसकी पूजा की जाय) की गुंजाइश है, न ईश्वर के अवतार अथवा छाया की परिकल्पना की और न ही ख़ुदा के लिए मख़लूक़ (प्राणी) में सरायत कर जाने (प्रवेश कर जाने) और दोनों को मिलाकर एक हो जाने के विश्वास की कोई गुंजाइश है। बल्कि एक अल्लाह जो किसी का मुहताज नहीं, के एकत्व का स्वीकरण और उसका इक़रार है जिसके न कोई बाप और न बेटा और न उसकी खुदाई में कोई उसका शरीक व साथी। इसी प्रकार सृष्टि की रचना, पैदाइश, संसार की व्यवस्था व संचालन, ज़मीन व आसमान का प्रभुत्व उसी के हाथ में हैं।

अर्थात इस सृष्टि का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वह सर्वगुण सम्पन्न है ओर हर प्रकार के अवगुण व कमज़ोरियों से अछूता है। समस्त प्राणी और समस्त ज्ञान उसके परिज्ञान में है।

पूरी सृष्टि उसी के इरादे से है। वह सुनने वाला, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है, न उसका को ई मुक़ाबिल और बराबरी वाला। वह बेमिसाल (अद्वितीय) है, यह किसी मदद का मुहताज नहीं, सृष्टि के चलाने और उसकी व्यवस्था करने में उसका कोई शरीक, साथी और मददगार नहीं। अ़िबादत का केवल वही मुस्तहिक़ है, सिर्फ वही है जो रोगी को रोगमुक्ति देता, प्राणी को रोजी देता और उनकी तकलीफों को दूर करता है। अल्लाह के अ़लावा दूसरों को मअ़बूद बनाना, उनके सामने अत्यन्त पतन, दीनता और आ़जिज़ी की अभिव्यक्ति तथा उनको सज्दः करना (माथा टेकना), उनसे दुआ़ मांगना और ऐसी चीज़ों में मदद मांगना जो मानव शक्ति से परे और केवल अल्लाह की कुदरत (सामर्थ्य) से सम्बन्ध रखती हैं (जैसे सन्तान देना, किस्मत अच्छी बुरी करना, आदि) या उनके विषय में ऐसा विश्वास रखना जैसे हर जगह मदद के लिए पहुंच जाना हर फ़ासिले की बात सुन लेना, दिल की बातों और छुपी हुई बातों को जान लेना, इस्लाम में यह शिर्क है, और सब से बड़ा पाप है जो बिना तौबा के क्षमा नहीं होती।

क़ुरआन मजीद में कहा गया है कि "उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाती है। (सूरः यासीन–८२)

१. अल्लाह न किसी के शरीर में उतरता है, न किसी का रूप धारण करता है न उसका कोई अवतार और न वह किसी जगह अथवा दिशा में सीमित है, जो वह चाहता है सो होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता, वह ग़नी (सर्वसम्पन्न) और बेनियाज़ (जो किसी का मुहताज न हो) है, किसी चीज़ का भी मुहताज नहीं, उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता उससे पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है ? उसके अ़लावा कोई (वास्तविक) हाकिम नहीं।

२. तक़दीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ़ से है, वह पेश आने वाली चीज़ों को पेश आने और घटित होने से पहले जानता और उनको अस्तित्व में लाता है।

३. उसके प्रतिष्ठा प्राप्त फ़िरिश्ते (देवदूत) है, ख़ुदा की मख़लूक में शैतान भी हैं जो आदमियों के लिए बिगाड़ का कारण बनते हैं और उसी की मख़लूक में से जिन्नात भी है।

४. क़ुरआन अल्लाह की वाणी है। उसके शब्द अल्लाह की तरफ़ से है, वह परिपूर्ण हैं, उसमें कोई कमीबेशी और तबदीली न हुई है और न हो सकती है, वह हर कमीबेशी और तबदीली से सुरक्षित है। जो व्यक्ति इस में कमी अथवा ज़ियादती (तहरीफ) का क़ाइल हो वह मुसलमान नहीं।

५. मुर्दों को अपने शरीर के साथ मरने के बाद ज़िन्दा होना निश्चित है, जज़ा (बदला) व सज़ा और हिसाब निश्चित है। जन्नत दोज़ख निश्चित है।

६. पैग़म्बरों का अल्लाह की तरफ़ से दुन्या में आना निश्चित है, यक़ीनी है और उनकी ज़बानी और उनके माध्यम से ख़ुदा का अपने बन्दों को हुक्म भेजना और शिक्षा देना निश्चित

है, बरहक़ है। मुहम्मद सल्ल० खुदा के अन्तिम पैग़म्बर हैं, आप के बाद कोई नबी नहीं। आप का आह्वान और पैग़म्बरी सारी दुन्या के लिए है। इस विशिष्टता में और इस जैसी दूसरी विशेषताओं में वह सब नबियों में अफ़ज़ल व उत्कृष्ट हैं। आप की रिसालत और पैग़म्बरी पर ईमान लाये बिना ईमान विश्वसनीय नहीं, और कोई दीन हक़ नहीं, इस्लाम ही अकेला दीन हक़ है। शरीअ़त के आदेशों से बड़े से बड़े ऋषि–मुनि और परहेज़गार व अ़िबादतगुज़ार लोगों को भी छूट नहीं है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, मुहम्मद सल्ल० के बाद इमाम और ख़लीफ़–ए–बरहक थे, फिर उमर (रज़ि०), फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ि०, फिर हज़रत अ़ली (रज़ि०)। सहाबा मुसलमानों के धार्मिक नेता और पथ प्रदर्शक हैं, उनको बुरा भला कहना हराम है और उनका मान सम्मान वाजिब व अनिवार्य है।

इस्लाम के स्तम्भ

अ़क़ीदे के बाद इस्लाम में जिस चीज़ का सबसे बड़ा महत्व है जिस पर बड़ा ज़ोर और जिसकी बड़ी ताक़ीद की गई है वह अ़िबादत है जो इन्सानों की पैदाइश का प्रथम उद्देश्य है। क़ुरआन मजीद में है।

अनुवाद– "और हमने जिन्न व इन्सान को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया कि वह अ़िबादत करें।"

इस्लामी शरीअ़त के अनुसार हर आक़िल–बालिग़ मुसलमान स्त्री–पुरुष पर पांच चीजें फर्ज है जो इस्लाम के स्तम्भ कहलाते हैं। (१) कलमः तोहीद (२) पांच वक्त की नमाज़ (३) अगर ज़कात की शर्तों को पूरा करें तो साल में एक बार अपने माल की ज़क़ात (४) रमज़ान के रोज़े (५) हज जो सामर्थ्य रखता हो उसपर ज़िन्दगी में एक बार फर्ज़ है।

यह वह अनिवार्य बातें हैं जिनका इन्कार करने वाला इस्लाम की परिधि से बाहर हो जाता है, और इनका बराबर छोड़ने वाला भी मुसलमानों की जमाअ़त से ख़ारिज है।

नमाज़–इस्लाम का दूसरा स्तम्भ

अ़िबादतों में प्रथम और महत्वपूर्ण स्तम्भ नमाज़ है। यह दीन का स्तम्भ और इस्लाम व मुसलमान की पहचान है। यहां तक कि इसको इस्लाम और ग़ैर–इस्लाम के बीच विभाजक रेखा क़रार दिया गया है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है–

अनुवाद– "और नमाज़ पढ़ते रहो और मुशरिकों में से न होना।

(सूरः रूम–३१)

और हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया–

अनुवाद– "इस्लाम और कुफ़्र के बीच (विभाजक रेखा) नमाज़ को छोड़ना है।" (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

नमाज़ नजात (मोक्ष) की शर्त है और ईमान की रक्षक है। नमाज़ हर आज़ाद, गुलाम, अमीर–ग़रीब, बीमार और तन्दुरुस्त, मुसाफ़िर और मुक़ीम (गैर–मुसाफ़िर) हर एक पर हमेशा के लिए हर हाल में फ़र्ज़ है और इसको अल्लाह ने हिदायत (अनुदेश) और रहनुमाई तथा तक़वा परहेजगारी (संयम) की बुन्यादी शर्त के तौर पर बयान किया है। किसी बालिग़ मुसलमान को किसी हाल में इससे छूट नहीं दी जा सकती। हां, अगर खड़े होकर या बैठकर भी न पढ़ सके तो लेटकर और अगर इसमें भी कठिनाई होती है तो संकेत से पढ़ सकता है, लेकिन नमाज़ अदा करने का हुक्म है। सफ़र में यह रिआ़यत है कि चार रकअ़तों वाली नमाज़ (ज़ुह्र, अस्र अ़िशा) दो रकअ़तों में अदा करें। सफ़र में सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें इख़्तियारी रह जाती है चाहे पढ़ें या न पढ़ें।

नमाज़ एक ऐसा फ़र्ज़ है जिससे किसी नबी और रसूल को भी छूट नहीं है। किसी वली, आ़रिफ़ व मुजाहिद का तो सवाल ही नहीं, नमाज़ मोमिन के हक़ में ऐसी है जैसे मछली के हक़ में पानी। अल्लाह फ़रमाता है :

अनुवाद – कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है। (सूरः अलअ़नकबूत–४५)

नमाज़ एक आध्यात्मिक पोषण

चूंकि इन्सान को इस धरती पर अल्लाह का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनना था और अत्यन्त संवेदनशील पद पर पदस्थापित होना था, इसलिए उसमें इच्छाएं भी रखी गई हैं और उसके साथ कुछ ज़रूरतें भी साथ कर दी गई हैं। उसमें संवेग भी है और प्रेम की ग़रमाहट भी, दुःख का एहसास भी और सुख की अनुभूति भी, जिज्ञासा भी, वह जिज्ञासु भी है और ज्ञानमयी भी। वह भूल की और भूमिगत समस्त सम्पदा से लाभ उठाने और उसे अपने उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाने के लिए उसको ऊंचे–ऊंचे पहाड़ों, वनस्पति, जीव और निर्जीव की तरह निरन्तर झुके रहने, (रुकुअ़), निरन्तर सज्दः में रहने और निरन्तर अल्लाह के गुणगान करते रहने का पाबन्द नहीं बनाया गया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सुन्दर रहन सहन

बच्चियों की तालीम व तरबियत

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

(विख्यात विचारक, लेखक और इतिहासकार अलीमियां नदवी की मां ख़ैरुन्निसा 'बेहतर' ने लड़कियों को घरेलू ज़िन्दगी, बच्चों का पालन पोषण, गृहस्थी तथा सद्व्यवहार का सबक देने वाली एक पुस्तक 'हुस्ने मुआशरात' के नाम से लिखी थी। पुस्तक की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए, लड़कियों के लिए विशेषकर, इसका क़िस्तवार अनुवाद यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है कि समाज सुधार की दिशा में यह प्रयास लाभदायक सिद्ध होगा। "सच्चा राही")

मैका
मां–बाप की सेवा और आज्ञापालन

मां–बाप की सेवा अच्छी तरह से करो। उन्हें किसी समय दुख न पहुंचाओ। खाना इच्छानुसार समय पर हाज़िर करो। जो कुछ कहें उसे दिल से सुनो। अगर वह कोई काम कर रहे हों तो उन्हें परेशान न करो और समय पर जिस खाने पीने के आदी हों उन्हें ला के दो। एक बात बार बार न कहो। उनके कपड़े आदि ठीक रखो। अगर बदलने की ज़रूरत पड़े तो तुरन्त लाकर दो, पानी, साबुन, तौलिया यह सब उपलब्ध हों। उनकी जगह और बिस्तर साफ रखो। उनसे तंग दिल न हो। हर समय हाज़िर रहो। किसी समय अगर ख़फ़ा हों तो आंखें चार न करो। उनकी वह मेहनतें जो तुम्हारे साथ की हैं याद रखो। अपनी हस्तकला से कुछ पैदा करके उनकी इच्छा पूरी करती रहो। उन पर एहसान न रखो। अपनी ज़रूरतें स्वयं पूरी करो। ज़रूरियात, काग़ज़ क़लम, रंग, सुई धागा, रेशम आदि सब तुम्हारे हाथों उपलब्ध रहें। अगर यह सब सामान तुम्हारे पास मौजूद हों उस समय तुम समझ सकती हो कि हां, हमें कुछ आता है। अन्यथा तुम्हारा ऐसा सोचना सही न होगा। मुझे पहले यह चाहिए कि तुम्हारे उन ऐबों (अवगुणों) को सुधारूं जो स्वाभाविक नहीं बल्कि अस्थायी हैं। यद्यपि तुम्हारे मां–बाप को इन का ध्यान नहीं मगर एक दिन यह असावधानी रंग लायेगी। तुम्हारा दुराचरण, लापरवाही, काहिली, स्वार्थ, आरामतलबी, बेअदबी, कंजूसी व तमकनत (घमंड) यही वह अवगुण हैं जो अभी तुम्हें मालूम नहीं होते मगर ज्यों ज्यों उम्र बढ़ेगी, तुम्हारे हक़ में ज़हर होते जायेंगे। फिर न तुम्हारा कोई सगा संबंधी होगा न कोई ग़ैर। प्रयास करके अक़्ल व हया (बुद्धि और लज्जा) अपने में पैदा कर लो। अक़्ल मौक़े पर राह बताने वाली होगी, शर्मा तुमको बुरे कामों से रोकेगी हर जगह खूबियां तुम्हारा साथ देंगी। तुम कभी अपमानित न होगी। तुम्हें कोई बुराई न पहुंचा सकेगा। जो मुश्किल तुम पर पड़ेगी तो खुदा के हुक्म से आसान हो जायेगी। संसार की व्यवस्था बुद्धि पर निर्भर है। जितनी समझ जिसे खुदा ने दी है उतनी ही खूबी के साथ वह काम करता है।

ऐ बच्चियो ! अपने बड़ों को देखो और उनसे अक्ल सीखो और उन्हीं की पैरवी (अनुसरण) करो। शर्म व हया और अक़्ल व समझ से काम ले कर दीन व दुनिया की मलाई हासिल करो। इज़्ज़त के साथ सुघड़ (सलीक़ामन्द) बनकर ज़िन्दगी बसर करो।

जब तुम्हारे सामने किसी प्रकार की अच्छी या बुरी मिसालें न पेश की जायें और पुराने ज़माने के हालात और रहन सहन तथा शिक्षा–दीक्षा का पूरा नक़्शा खींचकर न दिखाया जाये और उस समय की लड़कियों के अन्दाज़ स्पष्ट शब्दों में न जाहिर किये जायें तुम कदापि नहीं समझ सकतीं और न वह बातें पैदा कर सकती हो जो वास्तवमें इन्सानियत के जौहर हैं। न अपने अवगुणों की प्रतिपूर्ति (तलाफ़ी) कर सकती हो। यह तुम्हें मालूम है कि कौन कौन सी अमूल्य बातें तुम से अपेक्षित हैं और क्या उपयोगी बातें तुम से दूर हो रही हैं और किन किन गुणों से तुम वंचित हो। नहीं। क्योंकि तुम अनुभव विहीन हो।

पहले शिक्षा–दीक्ष कैसे की जाती थी

आम क़ायदा पहले यह था कि

बीबियां (महिलायें) बच्चियों को बुलाकर पास बिठातीं, उनसे मेज़े मज़े की बातें करतीं, नमाज़ की सूरतें याद करातीं और धीरे धीरे शरीअत के अहकाम (आदेश) तथा दीन के फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल कराती थीं। जब इस तरफ से इतमीनान हो जाता था तो सुन्दर रहन सहन की शिक्षा देती थीं। उनकी चाल ढाल पर हर समय नज़र रखती थीं और उनके हर अन्दाज़ को देखती थीं, हालांकि बचपने से उनमें किसी प्रकार की आजादी व खुदगर्जी, बेहयाई और बदअंदेशी व बद ख्वाही नहीं पाई जाती थी जैसे आजकल लड़कियों में आमतौर पर पाई जाती हैं। उस समय के तमाम विचार व ख़यालात बुजुर्गों के पसन्दीदा और कार आमद थे। लड़कियों की मायें अपनी अपनी लड़कियों को अपने क़ब्ज़े में रखती थीं, उनकी राहत पर अपनी खुशी को मुकद्दम रखती थीं।

बचपन से ही शर्म व हया के रास्ते पर लगाती थीं। उनकी शिक्षा–दीक्षा का उन पर वह असर पड़ता था कि फिर वह किसी दूसरे का असर न ले सकती थीं। उनके बैठने के लिए ऐसी जगह तजवीज़ की जाती थी कि वह बुरी बातों से सुरक्षित रह सकें। कभी बेपर्दगी न हो सकती थी। ग़ैर औरतों का भी वहां गुज़र मुश्किल था। मां या बहन जो किसी समय जाती थीं तो कुछ देर बैठकर उन्हें काम सिखातीं और ऊंच नीच बताती थीं। अच्छी बातों के प्रति रूचि पैदा करतीं और बुरी बातों से नफरत दिलाती थीं। हर बुरे काम का अन्जाम (नतीजा) बताकर उन्हें डराती थी। हया व शर्म को जौहर बनाके दिखाती थीं और बेहयाई का ऐसा भय पैदा कर देती थीं जिस से वह कांप उठती थीं। हर एक से पर्दा करना, और पर्दा करने का महल बतातीं। इन बातों का यह असर होता कि मामा और चाचा से बेतकल्लुफ़ न होतीं। एक बच्चा भी घर में न आ सकता था। रिश्ते के भाइयों से बहुत एहतियात रखतीं, बल्कि पर्दा करा देतीं। रिश्ते के लड़कों का घर में बैठना पसन्द न किया जाता। सिवाय चाचा, मामा, बाप और सेग भाई के अपने हाथ की तहरी (लेख) किसी औरको न दिखातीं। शर्म व हया की कठिन से कठिन गुत्थी को बड़ी आसानी व खूबी के साथ सुलझा देतीं। शरीअत के ख़िलाफ़ कामों से रोकतीं। और कुर्आन व हदीस और दीनियात की किताबों के अलावा किसी किताब पर ध्यान केन्द्रित न करने देतीं। साफ़ कह देतीं कि इन चीजों के अलावा दूसरी चीज़ों में समय लगाना बेकार है। नमाज़, रोज़: की ताकीद रखतीं। वज़ीफ़: और दुआ के प्रति लगाव पैदा करतीं। दीनियात की तमाम किताबें उनके पास मौजूद रहतीं। उस समय अगर धार्मिक शिक्षा की चर्चा न होती तो खुदा परस्ती दीनदारी और इन्साफ़ पसन्दी क्योंकर होती। औरतें तो औरतें मर्द भी केवल उपयोगी.और लाभदायक शिक्षा पर ध्यान देते और उस के लिए तकलीफ़ें उठांते थे। किसी बात का डर और भय न होता था सच तो यह है कि उस समय औलाद भी अपने मां–बाप की आज्ञाकारी और फरमाबरदार हुआ करती थीं और यह मात्र उनकी शिक्षा–दीक्षा का प्रभाव था, या यों कहो कि उनके सत्कर्म का अच्छा प्रतिफल था।

अनुवाद : मु० हसन अंसारी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान के तक़ाज़े

१. हर उस शिक्षा और हर उस मार्ग–दर्शन को निःसंकोच स्वीकार करे जो मुहम्मद सल्ल० से सिद्ध हो।

२. उसको किसी बात पर तैयार कर देते और किसी चीज से रोक देने के लिए केवल इतनी बात काफी है कि उसका आदेश या उस चीज़ का निषेध रसूल सल्ल० से साबित है। अनुपालन के लिए इस के सिवा कोई दूसरा तर्क आधार न बने।

३. खुदा के रसूल के अलावा किसी का स्वतंत्र नेतृत्व और पेशवाई स्वीकार न करे, दूसरे मनुष्यों को अनुपालन खुदा की किताब और खुदा के रसूल के तरीके के अन्तर्गत हो, न कि उनसे मुक्त हो कर।

४. अपने जीवन के प्रत्येक मामले में खुदा की किताब और उसके रसूल के तरीक़े ही को मूल प्रमाण और स्रोत माने। जो विचार या आस्था या तरीक़ा क़िताब और सुन्नत के आदेशानुसार हो उसे अपनाये और जो उसके विरुद्ध हो उसे छोड़े दे।

५. अज्ञान पर आधारित सारी संकीर्णताओं और पूर्वाग्रहों को अपने हृदय से निकाल दे, चाहे उनका सम्बन्ध स्वयं अपने से हो या उनका सम्बन्ध क़बीले और नस्ल से हो या राष्ट्र और देश से या उसका सम्बन्ध वर्ग और दल से हो। किसी के प्रेम और श्रद्धा में ऐसा ग्रस्त न हो कि वह रसूल सल्ल० के लाये हुए सत्य के प्रेम और उसकी श्रद्धा पर छा जाए या उसके बराबर का बन जाये।

सच्चाई व त्याग के कुछ नमूने

डा० मु० इज्तिबा नदवी

हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० मक्का में पांचवे व्यक्ति थे, जो हज़रत अबू बक रज़ि० की दावत पर बिना संकोच ईमान ले आये। उनके परिवार की प्रतिष्ठा, उनके व्यक्तिगत प्रभाव और धन दौलत के कारण उनके ईमान ले आने से अरब मुश्रिकों में खलबली मच गयी और मुसलमानों में उत्साह की लहर दौड़ गयी। इस्लाम स्वीकार करने के समय से जीवन के अन्तिम क्षणों तक इस्लाम और मुसलमानों की सेवा, प्रगति और उनके भले के लिए सारी शक्ति खर्च करते रहे।

वे नबी करीम सल्ल० के हर हर कदम के साथी और सहयोगी, ईमान व निष्ठा में खरे और मुरव्वत और सूझ बूझ उनकी रग रग में रची बसी थी। नबी सल्ल० को उन पर भरोसा था। अपनी दो बेटियों का एक के बाद दूसरा उनसे निकाह किया। हुदैबिया की सन्धि के अवसर पर कुरैश मक्का से बात करने तथा अपने आने का उद्देश्य समझाने के लिए नबी सल्ल० ने उन्हीं का चयन किया और जब यह सूचना पहुंची कि काफिरों ने उनको शहीद कर दिया है, तो उसका बदला लेने के लिए "बैअते रिज़वान" की प्रसिद्ध घटना घटी, जिस का कुरआन में भी उल्लेख किया गया है। बाद में यह सूचना गलत निकली।

हज़रत उसमान रज़ि० जब तक मक्का में रहे मुसलमानों की आर्थिक सहायता करते रहे और जब हिजरत की तो अपना कारोबार मदीना ले आए। अल्लाह ने उनके कारोबार में बड़ी बरकत दी और उन्होंने खूब दिल खोलकर मुसलमानों, निर्धनों, असहायों और लाचारों की मदद की। अनेक ऐसे अवसरों पर जब मुसलमानों पर चारों ओर से मुसीबतें आई और हर ओर से दरवाज़े बन्द नज़र आने लगे तब हज़रत उसमान रज़ि० ने उनकी सहायता की । नबी अकरम सल्ल० खुश हुए और जन्नत की शुभ सूचना दी। ईमान को ताजा करने वाले यह दृश्य अपनी आंखों से देख लीजिए।

नबी अकरम सल्ल० के मदीना हिजरत करने के बाद मक्का के मुसलमानों के लिए अलावा दूसरे क्षेत्रों और क़बीलों में जो लोग मुसलमान हुए, वे भी नबी सल्ल० की संगत से लाभ उठाने के लिए मदीना की ओर हिजरत करते और वहीं ठहर जाते। मदीना की आबादी बढ़ती गयी, यहां तक कि कुछ इलाकों में पानी की कमी महसूस होने लगी। मदीना का सबसे बड़ा और पानी से भरा हुआ कुआं बीरे रोमा एक मालदार यहूदी की सम्पत्ति था। वह मुसलमानों को उस कुंवे से पानी नहीं लेने देता था। इससे बड़ी परेशान व तंगी का सामना करना पड़ गया। नबी सल्ल० ने मुसलमानों की यह परेशानी देखी व सुनी तो इर्शाद फरमाया, "जो व्यक्ति रोमा का कुंआ मुसलमानों के लिए अर्पित कर देगा उसके लिए जन्नत की शुभ सूचना है।" हज़रत उसमान रज़ि० नबी सल्ल० का इर्शाद सुनते ही आगे बढ़े और वह जल स्रोत यहूदी से ३५ हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मुसलमानों के लिए अर्पित कर दिया। अन्य मक्का वासियों की तरह वह भी उस में से पानी मंगाया करते थे।

आइए देखें कि एक सेना तैयार की जा रही है। मुसलमान पूरी तरह व्यस्त हैं। नबी सल्ल० चिन्तित हैं और सहाबा से मश्विरा कर रहे हैं। सख़्त गर्मी का मौसम है खजूरों के बाग़ फलों से लदे हुए हैं। लेकिन अभी फसल तैयार होने में कुछ समय है। बड़ा भारी संकट का समय है, सेना की तैयारी के लिए जिसके पास जो है, ला रहा है और हुजूर के सामने ढ़ेर कर रहा है। अचानक लोगों की नज़रें उठ जाती हैं, दूर से हज़रत उसमान रज़ि० अपना सामान लिए आते दिखाई देते हैं। कुछ क्षणों में नबी अकरम सल्ल० के सामने घुटने मोड़ कर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि सेना की तैयारी के लिए दस हज़ार दीनार, तीन सौ ऊंट और पचास घोड़े, आवश्यक सामग्री सहित प्रस्तुत हैं। इसके अलावा तीन सौ सहाबा किराम रज़ि० को सेना में शरीक होने के लिए भी तैयार कर रहा हूं। नबी सल्ल० का चेहरा खुशी से खिला उठता है। आप फरमाते हैं आज के बाद उसमान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता। आसमान की ओर हाथ उठाकर दुआ करते हैं, मालिक तू उसमान से राज़ी हो जा, मैं भी उनसे खुश हूं और इसके बाद उनको जन्नत की शुभ सूचना सुनाते हैं।

यह घटना जंग तबूक की है, जिसे सेना की तंगी के नाम से भी याद किया जाता है क्योंकि मुसलमान उस समय बहुत ही दरिद्रता और लाचारी के शिकार थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० की खिलाफत का काल है। मुसलमान तंगी व अकाल से परेशान हैं। बड़ी मुश्किल से उनको अनाज व खाने का अन्य सामान मिल रहा है कि एक तिजारती काफ़िला में हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० के एक हज़ार ऊंट गेहूं और अनाज से लदे हुए मदीना में दाखिल होते हैं। यह खबर सुनकर मदीना के व्यापारी हज़रत उसमान रज़ि० के पास पहुंचते हैं और उस माल का सौदा करना चाहते हैं। कहते हैं कि यह माल हमें बेच दीजिए, ताकि हम इससे मदीना के ग़रीब लोगों को खाना उपलब्ध करा सकें। हज़रत उसमान रज़ि० मालूम करते है कि तुम लोग मुझे कितना नफा दोगे? लोग एक साथ जवाब देते हैं 'दस के बारह'। आप कहते हैं मुझे तो इससे अधिक की आफर हो चुकी है। वे लोग कहते हैं कौन ज्यादा देगा? मदीना के व्यापारी तो हम हैं। आपने कहा मुझे तो एक के दस मिल रहे हैं, क्या तुम इससे अधिक दे सकोगे? उन्होंने कहा नहीं, हम इतना नहीं दे सकते। फरमाया तो सुन लो ऐ मदीना के व्यापारियों ! ये सारे ऊंट सामान सहित मदीना के गरीब लोगों के लिए सदक़ा है।

इसी तरह की एक घटना देखिए : हज़रत उमर फ़ारूक रज़ि० की खिलाफत का जमाना है और बड़ा सख़्त अकाल पड़ा हुआ है। लोग भूख और मौत के भय से पेड़ों के पत्ते और मुर्दार खाने पर मजबूर हैं। इस परेशानी और बेबसी की हालत में हज़रत उसमान रज़ि० की तिजारत के एक हजार ऊंट अनाज व अन्य सामान के साथ आते हैं। व्यापारी उनको खरीदने के लिए टूट पड़ते हैं ताकि उनका सबसे पहले सौदा कर लें। हज़रत उसमान रज़ि० जवाब देते हैं कि मैं ने इन ऊंटों को सामान सहित अल्लाह की राह में दे दिया है, मुसलमानो के लिए ये सारे ऊंट सदक़ा है।

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० बड़े धनवान और प्रभावशाली होने के बावजूद अत्यन्त दयावान, आव भगत करने वाले और बड़े सादा स्वभाव के थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद रज़ि० का कहना है कि हज़रत उसमान रज़ि० अमीरुल मोमिनीन चुने जा चुके थे। एक जुमा को खुतबा दे रहे थे और जो कपड़े आपने पहन रखे थे, उनका मूल्य चार या पांच दिरहम से अधिक न था। हज़रत उसमान रज़ि० लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते थे और स्वयं सिरका और तेल से रोटी खाते थे।

एक दिन हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० ने अपने एक गुलाम से कहा: मैंने एक बार तुम्हरा कान खींचा था, तुम मुझ से इसका बदला ले लो। गुलाम ने उनका कान खींचना शुरू किया तो कहा ज़ोर से खींचो। दुनिया ही में इसकी सज़ा मिल जाए ताकि आख़िरत के अज़ाब से छुटकारा हासिल हो जाए।

असामाजिक तत्वों ने जब हज़रत उसमान रज़ि० को शहीद कर दिया और आपके घर की तलाशी लेनी शुरू की तो उनको एक सन्दूक मिला। उसे खोला तो उसमें से एक काग़ज़ मिला। उसमें लिखा था; "उसमान की वसीयत"। उस वसीयत के शब्द इस प्रकार थे।

"उसमान बिन उफ्फान गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है और उसका कोई भी साझी नहीं और बेशक मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं। बेशक जन्नत एक सत्य है और अल्लाह क़ब्र वालों को उस दिन के लिए जीवित करेगा, जिसके आने में कोई सन्देह नहीं। बेशक अल्लाह अपने वायदे के विरुद्ध नहीं करता। उसमान इसी पर ज़िन्दा रहा और इसी पर मर रहा है और इसी बात पर इन्शाअल्लाह उठाया जाएगा।'

आप कहा करते थे कि मुझे मालूम नहीं कि मुझे जन्नत मिलेगी या नरक। काश मैं यह खबर मिलने से पहले मिट्टी व राख होता और मेरा हिसाब न लिया जाता। अल्लाह तअला उसमान ग़नी रज़ि० से राज़ी हो।

(पृष्ठ २६ का शेष)

परन्तु मैं ने हिम्मत कर ली। दिन में क़ब्र की हालत देख आया वह ज़मीन बराबर थी। ११ बजे रात को एक टार्च और एक कुदाल लेकर क़ब्र पर पहुंच गया। रूपियों के लोभ ने शक्ति बढ़ा दी। शीघ्र ही हड्डियों तक पहुंच गया। टार्च से देखा तो हैरान रह गया। रूपिये हड्डियों से चिपके हुए थे, यह बात आदत के खिलाफ़ दिखी। दिमाग़ ने कहा हाथ न लगाओ वापस चलो। दिल ने कहा बड़ी मेहनत की है। किसी कारण रूपये हड्डी से चिपक गये छुड़ा कर ले चलो। हाथ बढ़ा दिया जैसे ही रूपयों से हाथ लगा जैसे लाल लोहा पकड़ लिया हो। किसी तरह चीख़ रोकी कि अभी बात का बतंगड़ हो जाएगा। किसी तरह क़ब्र बन्द की मुशकिलों से घर पहुंचा । हाथ में वह जलन कि जैसे आग में हों। नाना प्रकार की दवाएं लगाई परन्तु जलन न गई। इलाज से थक गया, उकता गया अब इस बालटी में बरफ़ का पानी रख कर हाथ उसमें डाले रहता हूं। बरफ़ न मिलने पर पानी ही में हाथ डाले रहता हूं। कुछ आराम तो मिल जाता है परन्तु जलन नहीं जाती।

नमाज़ की लज़्ज़त

डा० इहतिशाम अहमद नदवी
अध्यक्ष, अरबी विभाग
कालीकट यूनिवर्सिटी केरल

नमाज़ अल्लाह की नेअ़मत है। इस भौतिक और गन्दी दुन्या में दिल के संतोश का ज़रिया है। इसीलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि :–

अनुवाद – "मेरी आंख की ठंडक नमाज़ में है।" आंहज़रत सल्ल० ने कितने मनमोहक अन्दाज़ से नमाज़ के अन्दर छुपी रहमतों, बरकतों और दिल की शान्ति को एक छोटे से वाक्य में ज़ाहिर फ़रमाया। नमाज़ भौतिक मलीनता और सांसारिक घन पैदा करने वाली वस्तुओं से हमको दूर करके अल्लाह तबारक व तआ़ला से हमारे रिश्ते को मज़बूत करती है। बन्दा अपने रब से मिल जाता है और इस तरह उसको औसर मिलता है कि कठिनाईयों और समस्याओं से भरी और घिरी हुई दुन्या में रह कर भी थोड़ी देर के लिए एक ऐसे माहौल में पहुंच जाए जो पतन से दूर हो और जहां आख़िरत का ख़याल और अपने पैदा करनेवाले से मिलने का विचार पैदा हो सके। इसी आधार पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में बन्दा अपने रब से सरगोशी करता है (चुपके चुपके बात करता है) कितनी दिलकश और सही तस्वीर आंहज़रत सल्ल० ने खींची है कि बन्दा अपने रबसे सरगोशी करता है। सरगोशी में आदमी अपनी बहुत सी ऐसी बातें भी कह सकता है जो सभी के सामने कहने का साहस नहीं कर सकता। इसी कारण दीनी और दुन्यावी कठिनाइयां भी अल्लाह तआ़ला के सामने बन्दा पेश करता है। सरगोशी में वह अपने रब से क़रीब हो जाता है। वास्तव में सरगोशी उसी से हों सकती है जिसके क़रीबी सम्बन्ध हो और अल्लाह तो बन्दे से उसकी सरगोशी से भी अधिक क़रीब है।

नमाज़ की लज़्ज़त तो वही जानता है जो ध्यान मग्न होकर इस कर्तव्य को अदा करता है। सहाब–ए–किराम को तो इतनी तल्लीनता (महवियत) होती थी कि वह दुन्या और उसमें जो चीज़ें हैं सब से बेख़बर हो जाते। नमाज़ के लिए खड़े होते तो मालूम होता कि जैसे वह इस दुन्या की समस्याओं से बेतअल्लुक हो गये हैं देर तक सज्दा करते और सज्दों में इबादत का मज़ा प्राप्त करते।

हमारी नमाज़ों में वह लज़्ज़त नहीं इस लिए कि हमारे दिल पूरी तरह ध्यान मग्न नहीं अर्थात हम को दिल की सम्मुखता की दौलत हासिल नहीं।

मेरे माननीय गुरू मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह० फ़रमाते कि "हम क्या नमाज़ पढ़ते हैं बस किसी तरह बिलकुल हिसाब लगाकर गिन कर फ़राएज़ (कर्तव्य) अदा कर देते हैं। वह भी वक़्त बे वक़्त, जैसे हदीस में मुनाफ़िक़ की नमाज़ के बारे में फ़रमाया गया कि अ़स्र का वक़्त जब आख़िर होता है तो आकर जल्दी मुर्ग़ की तरह टोटें मार देता है। जल्दी में खटाखट रुकूअ़ व सज्दे की बड़ी अच्छी मिसाल आंहज़रत (सल्ल०) ने मुर्ग़ के टोंट मारने से दी है। बड़ी सच्ची उपमा है। ज़ाहिर है कि ऐसी नमाज़ में लज़्ज़त कहां है यह तो बोझ उतारना है बल्कि संतुलन न होने और अरकान (अनिवार्य बातों) का सही ढंग से अदा न करने के कारण ऐसी नमाज़ कुबुल ही नहीं होती। आंहज़रत (सल्ल०) के ज़माने में एक साहब तशरीफ़ लाए और जल्दी जल्दी नमाज़ ख़त्म कर दी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, – अनुवाद– नमाज़ पढ़ो, तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। नमाज़ में संतुलन और संतोष की ज़रूरत है। इसी कारण मल, मूत्र से छुट्टी प्राप्त करने की ताकीद की गई है, यहां तक कि यदि भूख लगती है हो तो पहले रात का खाना खा लें फिर इशा की नमाज़ अदा करे।

यह याद रहे कि नमाज़ आसान काम नहीं है। पांच वक़्त की पाबन्दी से नमाज़ पढ़ना बड़ा कठिन काम है। केवल खुदा से डरने वाले लोग ही पाबन्दी कर सकते हैं। खुद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया (अनुवाद) "नमाज़ बड़ी भारी चीज़ है सिवाए डरने वालों के" नमाज़ के समय– अ़स्र, मग़रिब, और इशा क़रीब क़रीब हैं। तफरीह (मनोरंजन) के समय और व्यापार के अस्ल समय यही हैं। इनमें खुदा की याद खुदा से डरने की दलील है। नमाज़ न्याज़मन्दी (अपने आप को खुदा

के सामने तुच्छ करके पेश करना) है दिल की निःस्वार्थता है और अपनी तरफ़ से अल्लाह तआ़ला के दरबार में आराधना और अपने प्रेम का विश्वास दिलाना है। मौलाना अब्दुस्सलाम किद्वाई नदवी (रह०) ने फ़रमाया कि हमसे जो कुछ हो सकता है अपनी शक्ति भर उसको अदा कर दें। कमी व बेशी अललाह तआ़ला माफ़ फरमा देगा। वास्तव में नमाज़ की लज़्ज़त मेहनत के अनुसार प्राप्त होती है। सुना है कि एक बुजुर्ग से किसी ने कहा कि हुजूर जन्नत में नमाज़ न होगी। उन्होंने फ़रमाया फिर नमाज़ के बिना जीवन में मज़ा क्या रह जाएगा। सच्चाई यह है कि जिन के जीवन में नमाज़ रच बस गई हो उनको बिना नमाज़ के ज़िन्दगी में कोई मज़ा महसूस नहीं होगा, नमाज़ के बिना नींद नहीं आती अगर आ गई तो फिर जागना ज़रूरी है। ऐसा महसूस होता है कि कोई प्यास है जो नींद से जगा देती है।

नमाज़ की शर्तों पर ग़ौर फ़रमायें – पवित्रता और पाकी जिसको आधा ईमान क़रार दिया गया, फिर वुज़ू उसके अतिरिक्त नमाज़ की कैफ़ियत पर ध्यान दीजिए रुकूअ़ और सजदा भक्ति और ध्यान मग्न व नम्रता की उच्चतम मिसालें हैं। इसी कारण आंहज़रत (सल्ल०) ने फ़रमाया कि सजदे में बन्दा अपने रब से अधिक क़रीब होता है।

फिर हदीसों में आता है कि प्रभात के समय उठकर नमाज़ पढ़ने से अल्लाह तआ़ला की प्रसन्नता, निकटता और महब्बत नसीब होती है। यही कारण है कि उस समय की दुआ़एं कुबूल होती हैं।

दुआएं ज़ाहिर में दुन्यावी लालच की तरफ़ संकेत करती हैं लेकिन यदि संसार में अल्लाह तआ़ला के बताए हुए तरीक़े से जीवन व्यतीत किया जाए तो ख़ालिस (विशुद्ध) दीनी काम भी अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी को प्राप्त करने का साधन बन जाता है। जैसे बाल बच्चों का पालन पोषण या रोज़ी कमाना। यह सब सांसारिक काम हैं परन्तु हलाल रोज़ी और बाल बच्चों का पालन पोषण अल्लाह तआ़ला के निश्चित किए हुए फ़र्ज़ के तौर पर की जाए और अच्छे ढंग से कर्तव्यों को पूरा किये जाने की दुआ़एं मांगी जाएं तो यह दीनी काम है यहां तक कि आंहज़रत (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हारे जिस्म का तुम्हारी आंख का भी तुम पर हक़ है। हक़ की पूर्ति शरीअ़त की नज़र में दीनदारी है। बस दुआएं जिसको इबादत का रस और निचोड़ क़रार दिया गया है वह भी इबादत हैं शर्त यह है कि इस में इच्छा शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो। लम्बी दुआ़एं और देरतक सजदे नमाज़ की लज़्ज़त को बढ़ाते हैं और दिल को लगाते हैं।

मस्जिद तो बना ली शब भर में
ईमां की हरारत वालों ने।
मन अपना पुराना पापी है
बर्सों मे नमाज़ी बन न सका।।

नमाज़ से लापरवाही को इस्लाम और कुफ़्र के बीच फर्क़ माना गया है। नमाज़ ज़िन्दगी का नूर और दिलों का सुरूर (आनन्द) है। मस्जिद में जमाअ़त के साथ (एक साथ) नमाज़ मुसलमानों के सामूहिक जीवन का चित्रण करती है। आंहज़रत (सल्ल०) आख़िरी बीमारी में हज़रत आ़एशा (रज़ि०) के हुजरे से पर्दा उठाया, सहाबा–ए–किराम नमाज़ अदा कर रहे थे। आप ने देखा और खुश हुए कि बन्दे अपने मौला के हुजूर में हाज़िर हैं। सहाबा ने समझा कि शायद आप मस्जिद आएं परन्तु आपने फिर पर्दा डाल दिया।

कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) जब नमाज़ शुरू करते तो उनकी आंख से आंसू मोती की लड़ियां बनकर निकलते।

इब्नुद्दग़ना की प्रसिद्ध घटना है कि जब कुफ़्फ़ार ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को बहुत परेशान किया और वह मक़्का छोड़ देने पर तैयार हो गए तो इब्नेदग़ना उनको पकड़ कर दोबारा लाया और उनको अपनी पनाह में ले लिया। उन्होंने अपने घर में मस्जिद बनाली और उसमें खूब दिल लगा कर ध्यानमग्न होकर लम्बी नमाज़ें पढ़ते, तिलावत (क़ुर्आन पाठ) करते। नमाज़ पढ़ते समय इतना रोते कि मुंह भीग जाता और नमाज़ में क़िराअ़त (क़ुर्आन की सूरः का पढ़ना) बुलन्द आवाज़ से करते। यह कैफ़ियत देखने के लिए मुशरिकीन की औरतें और उनके बच्चे इकट्ठा हो जाते। ज़ाहिर है दिल की आवाज़ दिल को प्रभावित करती है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) की नमाज़ खुद एक प्रचार का साधन बन गई। मक्का के मुशरिकों ने इकट्ठा होकर इब्नेदग़ना से शिकायत की कि तुम ने (हज़रत) अबूबक्र को पनाह दी मगर यह अपनी नमाज़ से हमारी औरतों और हमारे बच्चों को फ़ितने में मुबतला कर रहे हैं। घर में मस्जिद बना ली है। इब्नेदग़ना ने अबू बक्र (रज़ि०) से शिकायत की। हज़रत ने फरमाया कि तुम अपनी पनाह वापस ले लो, मैं तो नमाज़ इसी तरह पढ़ूंगा।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

तक्बीरे मुसलसल

डा० मसऊदुल हसन उसमानी
सिक्रेटरी दीनी तालीम कौंसिल
आरिफ आशियाना, चौक लखनऊ

दीनी तालीमी कौंसिल उत्तर प्रदेश गत् चालीस वर्षों से तालीम के मोर्चे पर सक्रिय है। उसकी गम्भीर खामोश और स्वीकारात्मक परिणामों से भरपूर सेवा एक न भूलने वाला इतिहास है।

देश के स्वतंत्रता के तुरन्त बाद उर्दू भाषा और इस्लामी आस्था की सुरक्षा के लिए इस तरह के संगठन की ज़रूरत महसूस की गई। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रीय मार्गदर्शक स्व० क़ाज़ी अदील अब्बासी की अन्तःदृष्टि और दूरदर्शिता से एक राह दिखाई दी और उन्होंने खुद अपने जिला बस्ती के मकतबों की स्थापना का आन्दोलन शुरू किया।

धीरे–धीरे इस बात की पहचान बनी और इस तालीमी व्यवस्था के लाभप्रद होने का प्रचार हुआ तो मुफ़क्किरे इस्लाम मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०) और हज़रत मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी (रह०) ने इस आन्दोलन व संगठन को प्रान्तीय स्तर पर क़ाइम करने और उसकी अहमियत से आम मुसलमानों को परचित कराने की जरूरत पर ज़ोर दिया।

क़ाज़ी साहिब की दावत पर ३०–३१ दिसम्बर १९५९ को बस्ती में एक शांदार दीनी तालीमी कान्फ्रेंस हज़रत मौलाना अ़ली मियां (रह०) की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिसमें पूरे देश के प्रसिद्ध उलमा, विभिन्न विचारों के संगठनों के जिम्मेदारान, वर्तमान सामान्य शिक्षा के विशेषज्ञ और शिक्षा व साहित्य के बुद्धिजीवी शरीक हुए।

आज़ाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों का यह सब से अहम पहला तालीमी समारोह था जिसमें इस समस्या पर ग़ौर किया गया कि भविष्य में भाषा व सभ्यता और दीन व दीनी आस्थाओं की महानता को किस प्रकार बाकी रखा जा सकता है। क़ाज़ी साहिब मरहूम ने आवाहक (दाअ़ी) की हैसियत से पूरे संगठन की योजना, कार्यविधि और सफल अनुभवों को सामने रख कर आज़ाद, खुद कफ़ील (स्वतःपोषित) आदर्श प्राईमरी मकतबों की स्थापना की योजना पेश की जो सर्व सम्मत से मंजूर की गई।

इस अवसर पर दीनी तालीमी कौंसिल उत्तर प्रदेश की स्थापना हुई और स्व० मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०) इसके अध्यक्ष और स्व० काज़ी अ़दील अ़ब्बासी इसके जनरल सिक्रेटरी हुए।

दीनी तालीमी कौंसिल उ०प्र०, ने प्राईमरी स्तर पर एक ऐसी तालीमी व्यवस्था की बुन्याद रखी जिसके द्वारा मुसलमानों की साक्षरता प्रतिशत में वृद्धि हुई, उर्दू भाषा की तालीम बाक़ी रह गई और मुसलमान नौजवान नस्ल की मिल्ली पहचान सुरक्षित रह गई। पाठ्यक्रम ऐसा बनाया गया जिसमें अ़क़ीदा, मस्लक (धार्मिक आस्था व विश्वास) की सुरक्षा के साथ देश प्रेम, और राष्ट्रीय एकीकरण के फलने–फूलने की पूरी व्यवस्था की गई। सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों को पाठ्यक्रम में रखा गया जो उर्दू मीडियम से पढ़ाये जाते हैं। हिन्दी को प्रथम दर्जे से और अंग्रेजी को तीसरे दर्जे से पाठ्यक्रम में दाखिल किया गया। कुरआने–पाक और दीनियात की तालीम अनिवार्य है। कक्षा पांच के बाद विद्यार्थी आज़ाद हैं कि वह आगे दीनी तालीम हासिल करें या सामान्य वर्तमान शिक्षा ग्रहण करें।

मुफ़क्किरे इस्लाम मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०) ३१ दिसम्बर १९५९ से ३१ दिसम्बर १९९९ तक पूरे चालीस वर्ष दीनी तालीमी कौंसिल के सर्वसम्मति से अध्यक्ष रहे। इस लम्बी अवध में हज़रत मौलाना (रह०) पूरे प्रान्त उ०प्र० और बाज़ वक़्त दूसरे प्रान्तों के महत्वपूर्ण स्थानों पर कौंसिल के समारोहों में दीनियात का महत्व और सामान्य वर्तमान शिक्षा की उपयोगिता, इस्लामी विचार व दर्शन की महानता और मिल्ली पहचान की बरकत व महिमा के विषय पर जन समुदाय को सम्बोधित करते रहे। मुसलमानों को उनकी दीनी साम्प्रदायिक ज़िम्मेदारियों के लिए और शासन को उनकी वैधानिक और लोकतन्त्र के मूल्यों की रक्षा के लिए और दोनों को इस देश का नाम रौशन रखने के लिए हज़रत मौलाना (रह०) एक मर्दे मोमिन और देशभक्त की हैसियत से पुकारते रहे।

गत् चालीस वर्ष हज़रत मौलाना अ़ली मियां (रह०) की यही "तकबीरे मुसलसल" अर्थात निरन्तर पुकार गूंजती रही है। इस सेवक ने इनके तमाम भाषणों और लेखों को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से संग्रहित करने और इसी नाम से प्रकाशित करने का कर्तव्य पूरा किया।

इसमें दीनी तालीमी कौंसिल के ऐतिहासिक शैक्षिक आन्दोलन का परिचय भी है, गत् शताब्दियों में मुसलमानों की ज्ञानात्मक और शैक्षिक सेवाओं की समीक्षा भी है, आज़ाद हिन्दुस्तान में सरकारी पाठ्यक्रम और शैक्षिक व्यवस्था की त्रुटियों पर साहसिक अभिव्यक्ति भी है। हज़रत मौलाना (रह०) की मोमिनाना और मुजाहिदाना शान भी है, और एक सच्चे निःस्वार्थ और दर्दमन्द देश प्रेमी की चिन्ता और दिल की तपिश भी है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी (रह०) और क़ाज़ी मुहम्मद अ़दील अ़ब्बासी (रह०) के साथ अनगिनत मिल्लत के बुज़ुर्गों के उद्धरण को शामिल करके संकलन को बहुत रोचक बना दिया गया है। डा० मुहम्मद इश्तियाक़ हुसैन कुरैशी साहब (जनरल सिक्रेटरी) के संक्षिप्त परन्तु परिपूर्ण लेख में चिन्तन करने की दावत भी है।

इस सेवक और लेखक का डेढ़ सौ पृष्ठ का लेख इस संग्रह में सम्मिलित है जिसमें गत् पचास वर्षों के इतिहास का चित्रण करने की कोशिश की गई है। इस संग्रह के संकलन और प्रस्तुति के सौभाग्य पर सेवक अपने मालिक के हुजूर में नतमस्तक हैं, अल्लाह तआ़ला स्वीकार करे। देश के भीतर शिक्षा के माध्यम से एक विशेष सभ्यता पर आधारित जिस कल्चरल इनक़िलाब का नारा बुलन्द किया जाता है और उसके लिए पूरी शिक्षा व्यवस्था को जिस प्रकार ग़ैर–सेक्युलर बना दिया गया उसकी पूरी व्याख्या और उसके परिणाम को मुसलमानों के दृष्टिकोण से समझने और भारत के संविधान की रोशनी में इनकी समीक्षा करने के लिए हज़रत मौलाना अ़ली मियां के इन लेखों का अध्ययन अनिवार्य है। इसके बिना देश का कोई इतिहास पूरा नहीं हो सकता। ज्ञानात्मक, शैक्षिक, सांस्कृतिक तब्दीलियों के नकारात्मक और सकारात्मक रूचि और उनके प्रभाव का सही अनुमान पुस्तक को पढ़े बिना सम्भव नहीं है।

यह बात बहुत ज़िम्मेदारी और सावधानी के साथ कही जा सकती है कि मुफ़क्किरे इस्लाम मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह०) के ज्ञान व अध्ययन का निचोड़, उनकी तमाम रचनाओं का रूहानी पैग़ाम, चिन्तन की दावत का सार, उसकी मनमोहक खुश्बू और भाषा व शैली की उत्तमता इस संग्रह "तकबीरे मुसलसल" में प्रत्यक्ष रूप से नज़र आती है। हज़रत मौलाना अ़ब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०) ने लिखा है और उसका अन्दाज़ा भी होता है कि बाज़ भाषणों में "अ़ली मियां ने अपना कलेजा निकाल कर रख दिया है।"

खुद हज़रत मौलाना ने लिखा है:–

"यह भाषण वस्तुस्थिति की सही अभिव्यक्ति, मुसलमानों के जज़्बात और दृष्टिकोण का सही प्रदर्शन ही की हैसियत से नहीं अपितु खुद भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय और बहुसंख्यक वर्ग की शुभाकांक्षा और देश प्रेम के लिहाज़ से भी ऐतिहासिक महत्व रखती है।"

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-508982
Mohd. Miyan Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226001

0522-508982
अनस मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

कुर्आनी तालीम का दहशतगर्दी से कोई तअ़ल्लुक नहीं।

मौलाना अब्दुल करीम पारिख

काफ़िर और नास्तिक का लफ़्ज़ गाली नहीं

हम यहां कुफ़्र के बारे में कुछ तफ़सील लिखेंगे। यह खुलासा करना भी ज़रूरी है कि जिस तरह अम्बिया–ए–किराम ने लोगों के घर–घर जाकर दीन की दावत को पेश किया, एक अल्लाह की बंदगी की तरफ़ बुलाया, उसी तरह जब तक हम हिन्दुस्तानी उलमा और अहले ईमान दीन की दावत को हिन्दू भाइयों के सामने पेश न कर दें तब तक हमें किसी को क़ाफ़िर कहने का कोई इख़्तियार नहीं है। कुफ़्र के अस्ल मानी क्या है ? तो अर्ज़ है कि यह लफ़्ज़ काफ़, फ़े, रे से मिलकर बना है। इसके एक मानी इंकार करने के हैं। एक मानी इसके नाफ़रमानी करने के हैं यानी बात को और हुक्म को नहीं मानना, किसान और काश्ताकार के मानी में भी इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल होता है। कुफ़्र के मानी छुपाने के भी हैं किसान और काश्तकार को अरबी में काफ़िर इस लिए कहा जाता है कि किसान अच्छे दाने और बीज को खेत की मिट्टी में छुपा देता है, फिर जब उन्हीं बीजों और दानों से उगकर उसकी लहलहाती हुई फ़सल और खेती तैयार होती है तो काश्तकार बहुत खुश होता है, इसी हालत को कुरआन मजीद में इस तरह बयान किया गया है–

जैसे बारिश की हालत में कुफ़्फ़ार (किसानों) को फ़सले बहार में अजीब खुशी होती है फिर जब खेती सूख जाती है तो तुम देखते हो कि पीली पड़कर जर्द रंग में बदल जाती हैं और चूरा–चूरा हो जाती हैं।

(५७ अलहदीद आयत २०)

कुरआन मजीद की इस आयत में 'कुफ़्फ़ार' किसानों और काश्तकारों को कहा गया है, अगर यह लफ़्ज़ गाली होता तो क्या अल्लाह तआ़ला सारी दुन्या के काश्तकारों को कुफ़्फ़ार कहता? काफ़िर इस मानी में कहा गया है कि अच्छे ख़ासे दाने और बीज को मिट्टी खोदकर उसके अन्दर दबा दिया।

कुफ़्र का लफ़्ज़ एक जगह अल्लाह ने अपने लिए भी इस्तेमाल किया है और यह बड़ी भारी बात मेरे मुंह से निकल गई लेकिन कुरआन मजीद में अल्लाह तआला की तरफ़ निसबत करके इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल हुआ इसलिए मुझे कहना पड़ा जैसा कि कुरआन मजीद में इरशाद है– अगर बचते रहोगे उन बड़े–बड़े गुनाहों से जिनसे तुमको मना किया गया है तो हम तुम्हारे छोटे–छोटे कुसूरों को मिटा देंगे और जन्नत में तुमको इज़्ज़त और करम वाला दाख़िला अता फ़रमाएंगे। (४–अलनिसाअ आयत ३१)

इस आयत में 'नुकफ़िफ़र' का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है यानी अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अगर तुम बड़े–बड़े गुनाहों से बेचोगे तो हम तुम्हारे छोटे–छोटे गुनाह मिटा देंगे। इससे मालूम हुआ कि कुफ़्र के एक मानी मिटाने और छुपाने के है। काफ़िर को काफ़िर इसलिए कहा जाता है कि वह सत्य यानी हक और सच बात को छुपाता है और हक के मुक़ाबले में उठ खड़ा होता है। दुन्या से हक और सच को मिटा देना चाहता है। अगर काफ़िर का लफ़्ज़ गाली होतो तो क्या अल्लाह तआला इस लफ़्ज़ को अपने लिए इस्तेमाल फ़रमाते ?

न कहें हम हिन्दू भाइयों को काफ़िर परन्तु, हम उनको मुशरिक और बहुदेववादी कह सकते हैं यानी बहुत से खुदाओं को मानने वाला, और यह बात सिर्फ़ कुरआन ने ही कही हो ऐसा नहीं है बल्कि खुद आर्य समाज के लोग क्या हैं ? क्या यह बहुदेववादी होते हैं? मूर्ति पूजा का जहां तक ताल्लुक है तो हिन्दुओं में कितने लोग मूर्ति पूजा नहीं करते। जैन मज़हब में लोग श्वेताम्बर पक्ष के स्थानकवासी होते हैं वह भी मूर्ति पूजक नहीं होते। यह नासमझी से बिला वजह का झगड़ा खड़ा किया गया है। मूर्ति पूजा अगर मुसलमान नहीं करते तो क्या यह कोई पाप की बात है ? क्या हिन्दुओं में बहुत से तबके ऐसे नहीं हैं जो मूर्ति पूजक नहीं होते?

कहा जाता है कि कुरआन में जगह–जगह काफ़िरों से लड़ने और मुशरिकीन का खून बहाने की तालीम दी गई है तो क्या खूंरेज़ी की यह

तालीम अम्न व आमान के खिलाफ़ एक नज़रियाती और अमली कोशिश नहीं है ?

मैं समझता हूं कि यह इशारा शायद (९–अत्तौबा की आयत–१२३) की तरफ़ हो जिसके अल्फ़ाज़ इस तरह हैं– ऐ ईमान वालो ! लड़ो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे आस–पास हैं और यह लोग तुको मज़बूत और सख़्त पाएं।

यह आदेश विशेष प्रस्थिति में विशेष काफ़िरों के लिए हैं। मक्के को छोड़कर स्वयं सऊदिया में कितने ग़ैर मुस्लिम रहते हैं ? क्या कभी वहां के दारुल इफ़्ता से उनसे लड़ने का आदेश हुआ? हरगिज़ नहीं। तो क्या सऊदिया के उलमा और शासक क़ुर्आन पर नहीं चलते ? ऐसा भी नहीं है। वह क़ुर्आन की शिक्षाओं पर अमल करने वाले हैं। वास्तव में आयत का आदेश आ़म ग़ैर मुस्लिम के लिए नहीं है बल्कि जैसा कि मैंने कहा वह आदेश विशेष प्रस्थिति में विशेष काफ़िरों के लिए है।

जो तुम से लड़े, तुम उससे लड़ सकते हो मगर ज़ियादती न करना

क़ुरआन मजीद की एक और आयत है शायद वह भी एतराज करने वालों के लिए एतराज़ का सबब बने मगर इसके अल्फ़ाज़ और मानी पर सही तौर से ग़ौर किया जाए तो कोई एतराज़ बाक़ी न रहेगा। आयत के अल्फ़ाज़ पेश हैं –

जो तुमसे लड़ाई करते हैं तुम भी अल्लाह की राह में उनसे लड़ो और ज़ियादती न करो क्योंकि अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। (२–अलबकरा आयत १६०)

मालूम हुआ कि किसी भी हक के इंकार और काफ़िर से बिला वजह लड़ने की ज़रूरत नहीं है। अगर बिग़ैर किसी वजह के लड़ने का हुक्म क़ुरआन में होता तो पूरी दुन्या से कुफ़्र को दीने इस्लाम के मानने वाले मिटा सकते थे। मुगलों ने साढे आठ सौ बरस हिन्दुस्तान में बड़े रौब और दबदबे से हुकूमत की क्या उनके दौरे हुकूमत में किसी आलिम ने यह फ़तवा दिया कि हिन्दुस्तान के तमाम हिन्दुओं को क़त्ल कर दिया जाए या उन्हें ज़बरदस्ती इस्लाम में दाख़िल कर दिया जाए ?

अगर इस्लाम का यह तरीक़ा होता तो हिन्दुस्तान में और मौजूदा मुस्लिम मुल्कों, मिस्र, सऊदी अरब, कुवैत, दुबई, ब्रूनाई वग़ैरह में एक भी ग़ैर मुस्लिम न होता बल्कि देखा जाए तो इन मुल्कों में बेशुमार हिन्दू, ईसाई और यहूदी वग़ैरह हैं। मैं तो कहता हूं कि सिर्फ बैतुल्लाह शरीफ़ जो अहले ईमान की ख़ास इबादतगाह है जहां एक अल्लाह को मानने वाले कुछ मखसूस आमाल और इबादात मखसूस हालत में करते हैं। चलते–फिरते, उठते बैठते इस जगह सिर्फ़ एक अल्लाह की बड़ाई किब्रियाई बयान करते हैं। अब जो भी शख़्स यह आमाल और इबादत कर सकता हो वह बैतुल्लाह शरीफ जाए और जो शख़्स ऐसे आमाल और इबादत न कर सकता हो उसके वहां जाने का क्या मतलब ? और उसके वहां जाने से उसका फ़ायदा ही क्या होगा ? वह कोई खेल तमाशा की जगह है ही नहीं कि हर कोई वहां पहुंच जाए। हां मक्का के अलावा दूसरे तमाम शहरों मस्जिदों, मुस्लिम इदारों या मुस्लिम मुलकों में किसी के आने जाने पर कोई पाबंदी नहीं।

हज़रत उमर (रज़ि०) का क़ातिल मदीना का शहरी

आपको मालूम होना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० की वफ़ात के बाद पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक़र सिद्दीक (रज़ि०) हुए हैं। उनके बाद दूसरे ख़लीफ़ा को किसने क़त्ल किया ? अबू लूलू मजूसी जो आतिशपरस्त यानी अग्नि पूजक था, उसने क़त्ल किया, वह उस वक़्त मदीने में रहता था। यह कैसे कहा जाता है कि दीने इस्लाम की मज़हबी किताब में काफ़िरों को मार डालने और क़त्ल कर डालने का हुक्म है अगर ऐसा होता तो क्या उस वक़्त मदीने में अबू लूलू मजूसी रह सकता था ?

मुस्लिम मुल्कों में हिन्दू बड़ी तादाद में रहते–बसते हैं

ग़ैर मुस्लिम लोग इस्लामी शहरों और मुल्कों में रह सकते हैं। उनके लिए हुक्म है कि वह जिज़्या अदा करें यानी सिटीजनशिप मुस्लिम हुकूमत को अदा कर दें। उसके बाद वह जहां चाहें रहें–बसें । मुसलमानों के मुक़ाबले में जिज़्या देने वाला ग़ैर मुस्लिम फ़ायदे में है। एक तो उसको ज़क़ात नहीं देनी पड़ती, सालाना माल का चालीसवां हिस्सा नहीं देना पड़ता है। जंग में शरीक होने की उस पर पाबंदी नहीं होगी, इस्लाम का कोई क़ानून भी उस पर लागू नहीं होता। उसको अगर कोई क़त्ल कर दे तो क़ातिल की सज़ा दी जाएगी। गैर मुस्लिम को किसी ने बिला वजह क़त्ल किया और उसके वारिसीन (उत्तराधिकारी) के क़ातिल को माफ़ करके खून बहा की रक़म लेना चाहें तो इस्लामी हुकूमत यह रकम उनको क़ातिल से दिलाएगी और अगर वारिसीन

(उत्तराधिकारी) सज़ा–ए–मौत की मांग करें तो क़ातिल को सज़ाए मौत दी जाएगी। बहरहाल ब्लड कम्पेंसेशन यानी खून का हर्जाना मक़तूल के अभिभावकों यानी रिश्तेदारों को दिलाया जाएगा। क़त्ल करने वाला चाहे मुसलमान हो या कोई और हो। लेकिन अगर क़त्ल करने वाला पकड़ में न आंया हो तो बैतुलमाल यानी सरकारी खज़ाने से खून के हरजाने की रक़म ग़ैर मुस्लिम मक़तूल के वारिसों को दी जाएगी। दीने इस्लाम में गैर मुस्लिमों के इतने हुक़ूक़ होते हुए कैसे यह समझ लिया गया है कि वह ग़ैर मुस्लिम को क़त्ल करने का हुक्म देता है?

बात दरअस्ल यह हुई कि कुछ जगहों के नादान और नाम के मुसलमानों ने जिहाद व क़िताल का ग़लत नारा लगाया। अपने ज़ाती मफ़ाद और ज़मीन जायदाद, मुल्की सरहद वग़ैरह के झगड़ों के बारे में बिला वजह इस्लाम को घसीटा और दीने इस्लाम की बदनामी का सबब बने। मैं इंशाअल्लाह आपके सामने इसका खुलासा करूंगा।

बेशुमार दहशतगर्द तंज़ीमें माओवादी, नक्सलवादी, वीरप्पन, बोडो और नागा वग़ैरह

क़ुरआन मजीद और हदीस पाक के अदना ख़ादिम और इस्लामी तारीख़ पर नज़र रखने की हैसियत से पूरे दावे के साथ मैं यह बात कहता हूं कि दीने इस्लाम में दहशत गर्दी की कोई गुंजाइश नहीं है। दीने इस्लाम में कहीं भी इस तरह की ज़ालिमाना कार्रवाइयों की हौसला अफ़ज़ाई नहीं की गई है बल्कि मैं तो यह भी कहूंगा कि दुन्या में पाए जाने वाले किसी भी मज़हब में दहशतगर्दी की कोई गुंजाइश नहीं है। बैनुल अक़वामी (इंटरनेशनल) हालात पर नज़र रखने वाले और पढ़े–लिखे लोग इस हक़ीक़त को अच्छी तरह जानते हैं कि कुछ मुल्क और तंज़ीमें अपने–अपने जाती मफ़ादात और माली व सियासी फ़ायदे हासिल करने के लिए इंसान और समाज दुश्मन अनासिर (तत्वों) को बढ़ावा देते हैं। उनको ताक़त पहुंचाते हैं। उनकी पुश्तपनाही करते हैं और इंसानियत के दुश्मन लोग जगह–जगह दहशतगर्दाना और ज़ालिमाना कार्रवाइयां करते रहते हैं जैसे कि नेपाल में माओवादियों ने चार सौ आदमियों को क़त्ल कर दिया।

इससे पहले काठमांडू में अड़तालीस पुलिस वालों को धमाका करके हलाक कर डाला । इन दोनों वाक़ियात में मारने और मरने वाले सबके सब हिन्दू थे। अब यहां कोई यह नहीं कहता कि यह हिन्दू आतंकवाद है या कोई यह नहीं पूछता कि क्या हिन्दू मज़हब दहशतगर्दी और आतंकवाद की तालीम देता है ? लेकिन अगर अनकम्युनिस्ट यानी माओवादियों में से कोई इस्लाम का नाम लेने लगे तो फिर यह सब क़त्ल व ग़ारतगरी और खून ख़राबा जो है इस्लाम के खाते में जमा हो जाएगा। अस्ल में सियासी लोगों ने दुन्या में टोलियां बनाई हैं और यह सब खरीदे हुए लोग हैं और मालूम नहीं किस मक़सद के लिये किसी मुल्क की ज़मीन और इलाक़े पर कब्ज़ा करने के लिए या लोगों पर हमला करने के लिए उनको इस्तेमाल किया जाता है। इन ज़रख़रीद लोगो में कुछ मुस्लिम लोग भी शामिल हैं जिनकी वजह से इस खून ख़राबे में दीने इस्लाम का नाम बिला वजह घसीटा जा रहा है।

वीरप्पन जैसा ज़ालिम आदमी जिसने हज़ारों लोगों को क़त्ल किया लेकिन किसी ने उसको हिन्दू मज़हब से नहीं जोड़ा। लेकिन अगर कोई मुसलमान वीरप्पन जैसा होता तो उसका सब किया धरा इस्लाम के नाम पर थोप देते। मैं कहता हूं यह उन सियासी मुसलमानों की ग़लती और भूल है, जिन्होंने अपने सियासी और ज़ाती मफ़ाद में इस्लाम को घसीटा है। जबकि न उन्हें इस्लाम दीन के बारे में कुछ मालूमात है और न क़ुरआन व हदीस की तालीमात पर उनका अमल है। उन्होंने इंडेक्स की मदद से क़ुरआन पढ़ा है कि क़िताल कहां कहां है और जिहाद कहां कहां है ? बस वह निकाल लिया और ठोकम ठाक शुरू कर दी। इन आयतों के आगे पीछे क्या है वह कुछ नहीं देखा।

तेरह साल मक्का शहर और दस साल मदीना शहर में क़ुरआन उतरा

एक बात यह भी क़ाबिले ग़ौर है कि क़ुरआन मजीद दो जगह उतरा है। तेरह साल तक मक्का में क़ुरआन मजीद का बड़ा हिस्सा नाज़िल हुआ और फिर जब रसूल (सल्ल०) हिजरत करके मदीना शरीफ़ गए तो क़ुरआन शरीफ़ का बाक़ी हिस्सा दस साल में उतरा। जिहाद का मक़सद है दीन के रास्ते से कांटे, पत्थर हटा देना, कड़ी मेहनत जिद्दोजुहद करके किसी की मदद कर देना पैसे से, माल से गरीबों को सहारा देना, दावते दीन पर जो तकलीफ़ें दी जाएं उनको बरदाश्त करना वग़ैरह शामिल है और आख़िरी हद में

जब जिहाद पहुंचता है वहां से क़िताल की सरहद शुरू होती है। क़िताल के मानी हैं हाथ में हथियार उठाना और यह बात उस वक़्त होती है जब आदमी हर तरह से मजबूर हो जाता है और कोई चारा नहीं रहता तो फिर वह हथियार उठाने पर मजबूर होता है इसको क़िताल कहते हैं। जिसकी तफ़सील यह है –

जिन लोगों को लड़ाई के लिए मजबूर किया गया उन पर ज़ुल्म ढाए गए तब अल्लाह की तरफ से उन्हें इजाज़त दी गई है कि वह भी मुकाबले के लिए उठ खड़े हों बेशक अल्लाह तआ़ला उनकी मदद पर क़ादिर है। (२२–अलहज्ज आयत ३९)

नन्द कुमार अवस्थी जी का एक प्वाइंट

हमारे मुल्क के कायस्थ ब्राह्मन हिन्दू व इल्मी शख़्सियत नन्द कुमार अवस्थी ने कुरआन मजीद का हिन्दी में तर्जुमा किया और कुरआन की डिक्शनरी का भी हिन्दी में तर्जुमा किया। उनको हिन्दी उर्दू और अरबी पर कमाल दर्ज की महारत हासिल थी। वह बहुत बड़े अहले इल्म और जानकार थे। उन्होंने तो इसका जवाब भी दिया था कि जिस वक़्त अरब में हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) पर कुरआन मजीद नाज़िल हो रहा था तो वहां हिन्दू कहां थे ? उस वक़्त मक्का और मदीना में एक भी हिन्दू नहीं था बल्कि हमारे ख़याल में उस वक़्त हमारे हिन्दू भाई हिन्दुस्तान से बाहर नहीं निकले थे। यह तो मुसलमान जब यहां आए तो यहां की गीता, यहां के वेद उपनिषद ताम्र पत्रिकाएं वग़ैरह के पन्ने जोड़जाड़ कर और उनका तर्जुमा करके ले गए तब बाहर की दुन्या के लोगों को मालूम हुआ कि हिन्दू कोई क़ौम है और उनका एक कल्चर है। उनकी एक तहज़ीब है वैसे हिन्दू तहज़ीब को मज़हब के नाम से भी शोहरत मिली। मुझे इस पर कोई एतराज़ नहीं है लेकिन आज आर. एस.एस. के लोग यहां तक कहने लगे कि हिन्दू कोई धर्म नहीं है बल्कि एक कल्चर है एक संस्कृति है। एह तहज़ीब है लेकिन अगर वह मज़हब भी कहें तो हमें एतराज़ नहीं।

उस क़ौम से जो मुसलमान न हो ?

किसी ने कहा जेहाद के बहुत से मानी होते हैं लेकिन इसका अस्ल मानी उस क़ौम के साथ जंग करना है जो मुसलमान न हो। यानि मुस्लिम क़ौम की सियासी बालादस्ती के लिए लड़ाई करना क्या इस ख़याल की तशहीर (प्रोपेगण्डा) मंतकी (तार्किक) और माकूल बात है ?

यह बात कि उस क़ौम के साथ जंग करना जो मुसलमान हो जिहाद है 'यह सत्य नहीं। आज एक ग़ैर मुस्लिम तो मक्का के अलावा सऊदी अरब के तमाम शहरों में जा सकते हैं खुद मदीने में ईसाई, यहूदी, हिन्दू और सिख वग़ैरह मिलेंगे। वहां उनकी दुकानें और होटलें वग़ैरह भी हैं। उनसे क्यों जंग करें ? दीने इस्लाम में तो लकुमदीनुकुम वलिय दीन' (तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन) का हुक्म है, लेकिन काफ़िर और मुशरिक जब मुसलमानों पर हमला करें तो फिर मुसलमानों को मुक़ाबला करने का हुक्म है। मुझे आप बताएं ? क्या किसी पर हमला हो तो उसे आप उस हमले का मुक़ाबला करने की इजाज़त नहीं देंगे ? मैं अपने सामने पैग़म्बर साहब के ज़माने की तीन जंगों का वाक्या बयान करता हूं।

एक तो जंग बद्र है जो दो हिजरी में हुई। हज़रत मोहम्मद पैग़म्बर साहब (सल्ल०) को इतना तंग किया गया कि उन्हें अपना वतन मक्का छोड़ना पड़ा, देश त्याग करना पड़ा। नुबूवत मिलने के तेरह साल बाद आप (सल्ल०) ने मक्का छोड़कर चार सौ मील दूर मदीना में पड़ाव किया और वहीं इधर–उधर के बिखरेऔर सताए हुए मुसलमान अपना–अपना देश त्याग करके हिजरत करके पहुंच गए। मदीने पर मुशरिकीन और कुफ़्फ़ार ने बार–बार हमले किए। मुसलमानों को जान माल का नुक़सान पहुंचाया। उनकी नाकाबंदी भी की। अनाज और ज़िन्दगी का सामान मदीने तक नहीं आने देते थे। मदीने का कोई व्यापारी इधर–उधर निकले तो उसके साथ मारपीट करते और क़त्ल भी कर डालते थे। फिर भी मुसलमानों ने सब्र किया और हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने किसी को लड़ने की इजाज़त नहीं दी। उसी बीच वाक्या हो गया कि कुफ़्फ़ारे मक्का का एक तिजारती क़ाफ़िला मुल्क शाम तिजारत के लिए गया था और क़ाफ़िले वाले कुरैशियों को ख़तरा हुआ कि शायद हज़रत मोहम्मद पैगम्बर और उनके साथी हम पर हमला कर देंगे। इस ख़तरे की वजह से उन्होंने मक्का से एक बहुत बड़ा लश्कर तलब कर लिया ताकि मुसलमान तिजारती क़ाफ़िले पर हाथ न डालें। उनकी यह तैयारी देखकर हज़रत मोहम्मद पैग़म्बर साहब (सल्ल०) को ख़याल हुआ कि कुरैशियों के यह दोनों जत्थे मिल कर कही मदीने पर हमला न कर दें तो हम उनका मुक़ाबला

करके अपना बचाव कर सकेंगे।

इसलिए हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने बाहर निकलना पसंद किया। तिजारती काफ़िला तो किसी तरह बचते बचाते महफ़ूज़ तौर पर मक्का पहुंच गया। मगर मक्के के आए हुए मुशरिकीन के लश्कर ने मुसलमानों से लड़ने और मदीने पर हमला करने का प्रोग्राम बना लिया, इस सब की ख़बर मदीनेमें हुजूर (सल्ल०) तक पहुंचती रहती थी। जब यह ख़बर मिली कि कुरैशियों का तिजारती काफ़िला मक्का पहुंच गया लेकिन मक्का से आया हुआ लश्कर बद्र के मक़ाम पर ठहरा हुआ है और हमसे लड़ने पर आमादा है तो आप (सल्ल०) अपने तीन सौ तेरह लोगों को लेकर बाहर निकले ताकि मुशरिकीने मक्का का हमला रोक सकें। मुसलमान भी बद्र के मैदान में जा पहुंचे, दोनों के बीच लड़ाई शुरू हुई। मुसलमान सिर्फ़ तीन सौ तेरह थे और मुशरिकीन का लश्कर एक हजार लोगों का था। फिर भी अल्लाह ने ईमान वालों को फ़तेह दी।

दूसरी जंग

इसके बाद एक दूसरी जंग हुई जिसे 'जंगे ओहद' कहा जाता है। यह तीन हिजरी में हुई। मुशरिकीने मक्का बद्र में हार गए थे। अपनी इस हार का बदला लेने के लिए पूरी तैयारी के साथ तीन हज़ार का लश्कर लेकर मक्का से निकले ताकि मदीने पर हमला करें और चलते चलते मदीने के बिल्कुल करीब 'ओहद' पहाड़ तक पहुंच गए। हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) मदीने से बाहर ही मुशरिकीन का हमला रोकने के लिए मुसलमानों को साथ लेकर मदीने से निकले और ओहद के खुले मैदान में उनका मुकाबला किया। दोनों तरफ से कुछ जानी नुकसान हुआ और अल्लाह ने इस जंग में भी मुसलमानों को फतेह दी लेकिन मुसलमानों के लश्कर की एक छोटी सी टोली की भूल की वजह से जीती हुई जंग हार में बदल गई। तक़रीबन सत्तर मुसलमान शहीद हुए और कई एक ज़ख़्मी हुए। हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने सात सौ साथियों को लेकर तीन हज़ार के लश्कर का मुक़ाबला किया और मदीने पर हमला नहीं होने दिया। मुझे आप बताएं कि इस तरह आपके घर पर कोई हमला करे तो आप क्या करेंगे? कुछ और जंगों का भी हम ज़िक्र कर सकते थे लेकिन मज़मून बहुत बड़ा हो जाएगा, इसलिए आगे हम सिर्फ़ एक जंग 'अहजाब' का ज़िक्र करेंगे।

जंगे अहज़ाब

तीसरी जंग जो 'जंगे अहज़ाब' और 'जंगे खंदक' के नाम से मशहूर हैं जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद की तैंतीस नम्बर की सूरत 'सूरा अहज़ाब' में आया है कि पूरे अरब के मुशरिकीन और कुफ़्फ़ार ने एक जुट होकर तीस हज़ार का लश्कर लेकर मदीने पर हमले का इरादा किया कि मुसलमानों का क़िस्सा ही तमाम कर दिया जाए। इसकी ख़बर जब मुसलमानों को हुई तो मशवरा किया गया कि उनका किस तरह मुक़ाबला किया जाए तो हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) के एक ईरानी साथी हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०) ने मशवरा दिया कि मदीने में दाख़िल होने के रास्तों पर चौड़ी और गहरी खंदक खोद ली जाए ताकि दुश्मन का लशकर शहर में दाखिल न हो सके और हम भी शहर के अन्दर से उनका मुकाबला करें। सब मुसलमानों ने मिलजुल कर खंदक खोदी। दुश्मनों का लश्कर जब मदीने के करीब पहुंचा तो वह अन्दर दाख़िल न हो सका और उनके घोड़े भी कूद कर खंदक को पार नहीं कर सकते थे। दोनों तरफ़ से एक दूसरे पर तीर बरसाए जाते थे। मुशरिकीन और कुफ़्फ़ार के इस गठबंधन ने एक महीने तक मदीने को घेरे रखा। ईमान वालों ने एक महीने तक ज़ख़्म पर ज़ख़्म उठाए और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से एक ऐसी तेज़ आंधी भेजी कि तीस हज़ार मुशरिकीन का यह लश्कर तितर बितर होकर भाग निकला।

इंतेहाई पेचीदा सूरतेहाल

इस परेशानी और मुसीबत के मौके पर हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने अपने घर की सब औरतों को और तमाम मुसलमानों की औरतों को एक छोटी सी हवेली में इकट्ठा कर दिया ताकि औरतों की तरफ से किसी क़दर इत्मीनान रहे। उस ज़माने में भी मदीने में यहूदियों के दो क़बीले आबाद थे। बनो नज़ीर और बनो कुरैज़ा उनसे मुसलमानों का सुलहनामा था यानी 'नाजंग' मुआहदा था। मगर उनसे भी मुसलमानों को ख़तरा हो गया था। मुसलमानों को चारों ओर से घिरा हुआ देखकर यहूदियों की भी नियत बदलने लगी थी कि यहूदी भी मुशरिक हमलावरों के साथ मिल जाएं और अन्दर से वह मुसलमानों पर और उन औरतों पर हमला बोल दें। ऐसी परेशानी के आलम में एक महीना मुसलमानों ने और हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) ने गुज़ारा। मदीने पर घेरा डालने वाले सबके सब कुरैश थे। अरब क़बाइल के लोग थे उनमें एक भी हिन्दू भाई नहीं

था। इस पर हिन्दू भाइयों को खुश होना चाहिए।

अब मुझे आप इंसाफ के हवाले से बताएं कि ऐसे अवसर पर आप क्या करते ? क्या उन हमलाआवरों का मुकाबला नहीं करते ?

ऐसे ही मौक़े पर कहा गया है कि उनसे लड़ो और पीठ फेर कर मत भागो। ऐसे मौक़े पर अगर पीठ फेरोगे तो सीधे जहन्नम के अन्दर जाओगे। मर जाओ तो कोई परवा नहीं शहीद होगे और अल्लाह के दरबार में ऊंचे मक़ाम से नवाज़े जाओगे। यह हौसला तो हर कमांडर अपनी फ़ौज को दिलाता है। इसलिए अगर कुरआन में रहमतुललिल आलमीन हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) को 'हर्रिज़िल मुअ्मिनीन अ़लल क़िताालि (लड़ाई के लिए ईमान वालों का हौसला बढ़ाओ) का हुक्म दिया गया तो इसमें कौन सी ग़लत बात है। लड़ाई के मौके पर तो हर एक कमांडर और सिपहसालार ऐसा करता है फ़ौजियों और सिपाहियों की हौसला अफ़ज़ाई उनकी हिम्मत बढ़ाने और दुश्मनों के मुकाबले में दिलेरी और बहादुरी के साथ लड़ने के लिए उन्हें इनामात, तमगे और बहादुरी के एवार्ड वग़ैरह दिए जाने का सिलसिला हमारी मौजूदा हुकूमतों के यहां भी जारी है। हमारे मुल्क में करगिल में और संसद भवन की हिफ़ाज़त करते हुए मारे जाने वाले जवानों के अहले ख़ानदान और पसमांदगान को तरह–तरह के इनामात एवार्ड और सहूलतें दी गईं। उन जवानों की ख़िदमत की क़दर करते हुए यह सब ज़िम्मेदारी है इस पर एतराज़ करने का किसी को क्या हक?

दुशमने इन्सां है शैतां कह रहा क़ुर्आन है
जिस ने दादा को डिगाया वह यही शैतान है
वसवसा शैतान का जब भी कभी महसूस हो
अपने रब को जो पुकारे बस वही इन्सान है
हो महब्बत दिल में रब की और हो हुब्बे नबी
हो सहाबा की महब्बत थे वह महबूबे नबी
हो अ़दावत या महब्बत जो भी हो रबे के लिए
हर अ़मल लिल्लाह कीज्यो तहते फ़रमाने नबी

Mohd. Aslam

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : अगर कोई ऐसे मोज़े पहने हुए हो जिन पर मसह दुरुस्त न हो फिर उन पर खुफ़्फ़ैन या ऐसे मोज़े पहन ले जिन पर मसह जाइज़ हो तो क्या वुज़ू में उन पर मसह कर सकता है? अन्दर वाले मोज़े अलग करना ज़रूरी तो न होगा ?

उत्तर : अन्दर वाले मोज़े अलग करना ज़रूरी नहीं है उस के ऊपर जो खुफ़्फ़ैन पहने हैं उन पर मसह करना जाइज़ है।

प्रश्न : खुफ़्फ़ैन पर कोई पैताबे या हल्के मोज़े पहन ले तो वुज़ू में उन पर मसह कर सकता है या नहीं?

उत्तर : खुफ़्फ़ैन के ऊपर वाले मोज़े पर से भी मसह कर सकता है।

प्रश्न : हमारे यहां जब किसी का इन्तिक़ाल हो जाता है तो उसको दफनाने के बाद उसके घर वालों के पास उसके दूसरे रिश्तेदार, दोस्त आदि ताज़ियत के लिए आते हैं और ताज़ियत का तरीका यह होता है कि मय्यित के घर वाले अपनी हैसियत के अनुसार दरवाज़े पर या किसी खुली जगह पर चार कुर्सियां डाल कर बैठ जाते हैं अब बाहर से ताज़ियत के लिए जो भी आता है वह आते ही यह शब्द कहता है। "फातिहा शरीफ पढ़ें" यह कह कर वह चारपाई पर बैठ जाता है और हाज़िरीन हज़रात अपना अमल दोहराते हैं यानी फ़ातिहा पढ़ते हैं यह सिलसिला कई कई दिनों तक जारी रहता है। इस ताज़ियत में बाहर से आने वाले हज़रात के लिए खाने और रात में ठहरने का इन्तिज़ाम भी किया जाता है। जिसका तमाम खर्च मय्यित के घर वाले उठाते हैं। ताज़ियत के इस अमल में चूंकि विभिन्न जमात के लोग जमा होते हैं इसलिए कोई न कोई बहस होती ही रहती है। कभी सियासी, कभी दीनी और कभी तन्ज़िया नुक्ताचीनी और कभी–कभी यह बात भी आ जाती है कि हमारा यह ताज़ियत का तरीका गलत है और कुछ लोग कहते हैं कि सही है और कुछ लोग कहते हैं कि बिदअ़त है।

१. अब आप हमें बताइये कुर्आन व सुन्नत और फिक: की रोशनी में कि यह कैसा है?

२. और अगर इस तरीक़े को सवाब समझ कर करें तो शरीअ़त में इस का क्या हुक्म है और अगर हम इसे सवाब की नियत से न करें बल्कि एक रस्म के तौर पर करें जैसा कि और भी ऐसी बहुत सी रस्में हैं तो फिर ऐसी सूरत में हमारे लिए शरअ़ी हुक्म क्या है।

३. अगर यह तरीक़ा ग़लत है तो ताज़ियत का इस्लामी तरीक़ा क्या होगा ?

उत्तर : १. ताज़ियत का यह तरीक़ा कुरूने ऊला अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्ल० या सहाबा में से किसी से साबित नहीं इसलिए गलत और छोड़ना वाजिब है।

२. अगर इस रस्म को सवाब समझ कर किया जायेगा तो दीन में ज़ियादती है और बिदअ़त है और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया कि जिसने दीन में ज़ियादती की वह मर्दूद (तिरस्कृत) है और अगर केवल रसम के तौर पर किया जाय तो भी सही नहीं क्योंकि यह दुन्यावी रसम नहीं, मज़हबी रस्म है और मज़हबी रस्म जब शरीअ़त से साबित न हो तो बिदअ़त होती है। अर्थात आगे चल कर बिदअत बनने का अन्देशा तो ज़रूर होता है। अतः दोनों सूरतों में छोड़ना वाजिब है। इलाके के उलमा से मालूम करके इसका सुधार करें।

३. ताज़ियत का सुन्नत तरीक़ा यह है कि ताज़ियत की मुद्दत तीन दिन है, तीन दिन के बाद सही नहीं अगर कहीं बाहर दूर रहने वाला तीन दिन के बाद आये तो कर सकता है मगर जमाअत के रूप में आने का एहतिमाम करना सही नहीं अगर अचानक बिना इरादे के एक साथ हो जाये तो हर्ज नहीं, हर एक के लिए ताज़ियत मस्नून है मगर एक घराने का कोई बड़ा और उसके साथ उसके मातहत लोग भी हैं तो केवल बड़े ही की ताज़ियत काफ़ी है।

आपको "सच्चा राही" कैसा लगा अवश्य लिखें।
–सम्पादक

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

सूर–ए–अह्क़ाफ (छब्बीस्वां पारा) में आया है : इन्ना समिअ़ना किताबन उन्ज़िल मिम्बअ़दि मूसा" (हमने मूसा (अ०) के बअ़द नाज़िल की गई किताब (की बात) सुनी।)

एक समय हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पवित्र कुर्आन का पाठ कर रहे थे। जिन्नों का एक गुट आया और उसने कुर्आन सुना फिर वह लोग अपनी कौम की ओर गए और इस की सूचना देते हुए ईमान लाने की दावत दी। इससे ज्ञात हुआ कि लम्बी आयु मिलने के कारण स्वयं या अपने पूर्वजों द्वारा मूसा अलैहिस्सलाम की किताब सुन चुके थे। प्रत्यक्ष है जब उनके लिए भी आसमानी किताबें हैं तो उनको सुन कर कोई ईमान लाएगा तो कोई इन्कार करेगा।

सूर–ए–जिन्न में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाने से पहले के जिन्नों की हालत बताने के लिए जिन्नों का कथन प्रस्तुत है : "व अन्ना मिन्नस्सालिहून व मिन्ना दून ज़ालिक" (और यह कि हममें बाज़े नेक होते आए हैं औ बाज़े और तरह के) जो अपने ज़माने के नबी की बात न माने वह नेक नहीं हो सकता लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पहले के जिन्न ईमान वाले भी होते थे और इन्कार करने वाले भी।

इब्लीस क़ियामत तक ज़िन्दा रहेगा

पवित्र कुर्आन से सिद्ध है कि इब्लीस क़ियामत तक जीवित रहेगा। वह आदम की सन्तान को भांति भांति तथा नाना प्रकार की चालों से बहकाता रहेगा परन्तु अल्लाह के ख़ास बन्दों (सत्य भक्तों) पर उस का दांव न चल सकेगा।

इब्लीस की सन्तान के विषय में हज़रत इब्नि अ़ब्बास का एक क़ौल

इब्लीस की सन्तान के विषय में इब्नि अ़ब्बास का एक कथन है कि वह भी इब्लीस के साथ क़ियामत तक जीवित रहेंगे और इन्सानों को बहकाने में लगे रहेंगे।

तफ़्सीरे ज़ादुलमसीर में सूर–ए–हिज्र की आयत २७ की तफ़्सीर के अन्तर्गत इब्नि अ़ब्बास का जो क़ौल नक़्ल किया गया है उसका अनुवाद इस प्रकार है :

"जान्न जिन्नों का मूरिसे अअ़ला (मूल पुर्खा) है और सब जिन्न शैतान नहीं हैं, शैतान तो इब्लीस की सन्तान हैं वह इब्लीस के साथ ही मरेंगे अर्थात पहले न मरेंगे। और जिन्न तो मरते हैं, उनमें ईमान वाले भी हैं और कुफ़्र करने वाले भी ।"

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने उ़ज़्ज़ा की शैताना को जो क़त्ल किया था वह उनकी करामत थी। उसे इब्नि अ़ब्बास के क़ौल प्रथक समझा जाएगा। उम्मीद यही है कि हज़रत इब्नि अ़ब्बास (रज़ि०) ने यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनकर फरमाया होगा वल्लाहु अअ़लम।

इस रिवायत से सिद्ध हो रहा है कि इब्लीस की औलाद (सन्तान) भी क़ियामत तक ज़िन्दा रहेगी और इब्लीस के साथ ही मरेगी लेकिन इस रिवायत में यह नहीं कहा गया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया अतः यह बात शुद्ध रिवायतों से सिद्ध बातों की तरह नहीं है।

क़रीन अर्थात हमज़ाद जो हर इन्सान के साथ पैदा किया जाता है यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का भी एक क़रीन था। क़रीन के बारे में यह तो स्पष्ट है कि वह जन्म से शैतान ही है। इस लिए कि उसका काम अपने हमज़ाद (जन्म साथी) इन्सान का बुराई की ओर ले जाना है।

लेकिन उसे तौबा प्रदान हो सकती है या नहीं इसमें उलमा का मतभेद है। कुछ लोगों ने कहा कि वह मुसलमान हो सकता है जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का क़रीन मुसलमान हो गया था। कुछ बुज़ुर्गों का कहना है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के करीन के लिए शब्द "असलम" आया है। इस का अर्थ है कि वह आज्ञाकारी हो गया था मगर ईमान नहीं लाया था, जो भी हो, अगर वह मुसलमान भी हुआ तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़रीन था और यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विशेषता थी। दूसरे क़रीनों के विषय में कोई संकेत नहीं मिलता और सत्य तो यह है कि इब्लीस और उसकी सन्तान और क़रीन इन सब का मिशन ही पथभ्रष्टता फैलाना है। तो ऐसों को तौबा कहां प्रदान हो सकती है। वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु।

बनी इस्राईल की गाए

अहमद अ़ली नदवी

बनी इस्राईल को जब किसी काम को करने को कहा जाता तो वह न करने के बहाने में सुवालों की बौछार कर देते। यह आदमी की आदत है कि जब उसको काम करना नहीं होता तो सुवाल ज़ियादा करने लगता है। बनी इस्राईल में किसी का क़त्ल हो गया। जिस का क़त्ल हुआ वह बड़ा प्रसिद्ध था। बनी इस्राईल ने उस को बड़ी अहमियत दे रखी थी। क़ातिल का पता नहीं चल पा रहा था। लोगों में उस क़त्ल और क़ातिल पर बड़ी चेमीगोइयां (बातें) होने लगीं। वह सब मूसा अ० के पास आए और कहने लगे "ऐ मूसा ! इसमें आप हमारी सहायता करें। आप खुदा से दुआ करें कि वह क़ातिल को ज़ाहिर कर दे।"

गाय

मूसा अ० ने दुआ की। अल्लाह ने "वही" की कि वह बनी इस्राईल से एक गाय ज़ब्ह करने को कहें। उनके लिए यह एक मुसीबत हो गई। अब उन्होंने गाय के बारे में सुवाल करना शुरू कर दिये और उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे।

मूसा अ० ने जब बनी इस्राईल से गाय ज़ब्ह करने को कहा तो कहने लगे "ऐ मूसा ! क्यों हमसे मज़ाक़ करते हो मूसा अ० ने कहा कि मैं ऐसी बेवकूफी की बात नहीं करता। (अल्लाह की पनाह)।"

जब उन्होंने सुवाल करना शुरू (आरम्भ) कर दिये और कहने लगे कि अपने खुदा से पूछो कि गाय कैसी हो? उनसे कहा गया कि अल्लाह कहता है कि गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया। इन दोनों के बीच की हो। अब तुम वही करो जिसके करने का तुम्हें आदेश दिया जा रहा है। वह इस बात से संतुष्ट नहीं हुए और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से उसके रंग के बारे में पूछ लो कि किस रंग की हो? बनी इस्राईल से कहा गया कि गाय पीले और शोख़ रंग की हो जो देखने में अच्छी भली लगे। जब जवाब न बन पड़ा तो फिर पूछ बैठे और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से पूछो कि स्पष्ट बतायें कि गाय कैसी हो। हम तो गड़बड़ा गये। समझ में कुछ नहीं आ रहा है। अबकी हम तुम्हारी बात मान लेंगे। मूसा अ० ने उनसे कहा कि अल्लाह कहता है कि ऐसी गाय ज़ब्ह करो जो अच्छे क़िस्म की हो। उसको खेती और सिंचाई के काम में न लगाया गया हो। वह हर तरह से पूर्ण हो। उसमें किसी क़िस्म की कमी न हो कोई ऐब व अवगुण न हो।

अब उनसे कोई जवाब न बन पड़ा तो कहने लगे कि अब हमारी समझ में आ गया। अब इंशाअल्लाह ऐसी गाय ज़ब्ह कर देंगे। अपनी हिमाक़त (ग़लती) का अन्दाज़ा हुआ। अल्लाह को रहम आया और ऐसी गाय का अल्लाह ने प्रबन्ध (इन्तिज़ाम) कर दिया। अब उनको वैसी गाय मिल गयी जैसी ज़ब्ह करने को उनको आदेश था। उन्होंने उसको बहुत कम क़ीमत देकर ख़रीदा और उसको ज़ब्ह कर दिया। मगर बड़ी बेदिली और मजबूरी में ऐसा किया। अल्लाह ने हुक्म दिया कि ज़ब्ह हुई गाय के किसी हिस्से से मक़तूल को छुवा दिया जाये तो वह क़ातिल का नाम बता देगा। और फिर ऐसा ही हुआ।

शरीअ़त

अब बनी इस्राईल का जानवरों की तरह से रहना–सहना समाप्त हुआ और आदमियों की तरह जीवन गुज़ारने लगे। शरीफ़ों की तरह स्वतंत्रता से उस खुशकी में रहने लगे। अब उनको शरीअ़त की आवश्यकता पड़ी जिसकी रोशनी में सही और सीधे रास्ते पर चले। इन्सान को सही रास्ते पर चलने के लिए अल्लाह की शरीअ़त (क़ानून) और उसकी रोशनी की आवश्यकता पड़ती है। अल्लाह के नूर (रोशनी) के बिना यह संसार अंधकार में है। यही नूर नबियों की शिक्षा है जिससे लोग हिदायत पाते हैं और जिन्होंने इस नूर और उनकी शिक्षा को न माना, मनमाने ढंग से अपना जीवन बिताया वह अंधकार में रहे।

अल्लाह तआ़ला ने फिर बनी इस्राईल के लिए शरीअ़त का प्रबन्ध किया और मूसा अ़लैहिस्सलाम को तूर पर बुला कर अपनी किताब तौरात प्रदान की जिस का बयान कुर्आन मजीद में विस्तार से है।

परन्तु जलन नहीं जाती

अब्दुल्लाह सिद्दीक़ी

स० १६४० ई० के निकट की बात है कि एक सज्जन –

सफ़ेद कुरता, सफ़ेद पैजामा, सफ़ेद टोपी, सफ़ेद जूतों में दिखते, गोरा बदन उस पर सफ़ेद दाढ़ी क्या मैच मिला था। उससे अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि वह एक छोटी सफ़ेद बाल्टी दाहिनी ओर सफ़ेद पट्टी से लटकी रहती दाहिना हाथ उसी में पड़ा रहता। जब दिखते इसी हाल में दिखते कोई पूछता तो बिना उत्तर दिये बढ़ जाते। कोई समझता पहुंचे फ़क़ीर हैं तो कोई सनकी कहता तो कोई पागल बताता। एक दिन एक साहिब पीछे पड़ गये हाथ पकड़ कर बिठा लिया, चाय मंगाई और कहा कि आज तो आप को बताना ही पड़ेगा कि आप का दाहिना हाथ बराबर बालटी में क्यों रहता है? उन्होंने एक ठंडी सांस भरी और बताना आरम्भ किया –

मैं न कोई बुज़ुर्ग हूं न सनकी, न पागल जैसा कि कभी–कभी किसी को कहते सुनता हूं मैं फुलां महल्ले का रहने वाला हूं। बाल बच्चे हैं, मकान है, कारोबार है। मेरे मकान के सद्र दरवाज़े (मुख्य द्वार) से मिला एक बैठका है उसमें चार पलंग सरलता से पड़ सकते हैं। वह रात में बिल्कुल ख़ाली रहता है। एक दिन एक भिखारी आया और उसने कहा कि आज्ञा हो तो रात में मैं आप की चौपाल में सो जाया करूं। मैंने सोचा बैठका ख़ाली पड़ा रहता है, मुफ्त का चौकीदार मिल रहा है आज्ञा दे दी, उसी दिन से वह हमारे बैठके में रैन बसेरा करने लगा। कभी कभी घर का बचा खाना भी उसे दे दिया जाता जिसे वह ख़ुशी से ले लेता। वह दिन भर भीख मांगता और रात को बिला नागा मेरे बैठके में रात बिताता। एक रात मुझे कुछ खन खन की आवाज आई बैठके से मेरे अन्दर के कमरे में एक जंगले वाली खिड़की थी खिड़की बन्द करने पर भी इसकी दराज़ से बैठके में झांका जा सकता था, उजाली रात थी चांदनी कुछ इस प्रकार पड़ रही थी कि जंगले की दराज़ से भिखारी साफ दिखता था। मैने झांका तो हैरत में रह गया भीख मांगने वाला ढेर से चांदी के रूपये इस हाथ से उस हाथ में, उस हाथ से इस हाथ में गिरा रहा है कभी कभी उसी से खनक की आवाज़ आ जाती। अब मेरा रोज़ नियम हो गया मैं रात में उस को झांकता और वह रोज़ इसी तरह रूपयों से खेलता। मुझे अल्लाह ने रखा था कभी नियत खराब नहीं हुई। एक महीने के पश्चात मैं ने झांकना छोड़ दिया। मगर खनक की आवाज़ जब तब अपने बिस्तर पर से सुनता रहता।

एक दिन भिखारी बीमार हो गया। मुझे बुलाकर कहा, मेरा कोई अज़ीज़ नहीं, फ़क़ीर हूं, बीमार हूं, मुझ को दवा दिला दीजिए। मैंने उसका भेद नहीं खोला बे दिली से दवा दिला दी। महल्ले के लोगों को मालूम हुआ तो महल्ले वाले भिखारी समझ कर खाना भी भेजते रहे और दवा भी दिलाते रहे। मैंने न उसका भेद खोला न उसकी सहायता में रूचि ली। फिर भी जब तब फल फलारी पहुंचा दिया करता था। भिखारी का मरज़ बढ़ता गया यहां तक कि उसको यक़ीन को गया कि अब उसका अन्तिम समय है। एक दिन उसने मुझे अकेले में बुलाया और वसीयत की कि मेरी गुदड़ी के नीचे चांदी के एक हजार रूपये हैं कृपया इन रूपयों को मेरी क़ब्र में रख दीजिएगा। मेरे नज़दीक यह काम बहुत बुरा भी था और कठिन भी मगर न जाने मैं ने क्यों वअ़दा कर लिया।

भिखारी मर गया लोगों ने उसको नहलाने कफ़नाने और दफ़नाने में बढ़ चढ़ कर भाग लिया, मैं भी साथ–साथ लगा रहा। उसकी गुदड़ी के नीचे से एक हजार चान्दी के रूपये चुपके से निकाल कर एक थैली में भर लिये थे। वह दस किलो से अधिक थे परन्तु थैली छोटी ही बनी थी। वह थैली जिस तरह छुपा कर मैं क़ब्रिस्तान ले गया और जिस प्रकार छुपा कर क़ब्र में रखा वह मेरा कारनामा ही था।

भिखारी को दफ़न कर के चले आए, उन रूपयों को भुला दिया परन्तु तीन साल बाद मुझे काफ़ी रूपयों की ज़रूरत पड़ गई। अचानक मेरा ध्यान भिखारी के रूपयों की ओर गया। मैंने खूब सोचा विचारा अन्ततः तै किया कि रात में अकेला जाकर क़ब्र खोदकर रूपिये निकाल लाऊं। काम कठिन था

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सच्चा राही का नया वर्ष

ईश मार्ग का सच्चा राही ईश प्रेम में निकला है।
ईशादेश का पालन करना लक्ष वह लेकर निकला है।।
जहां तलक पहुंचे गा राही प्रेम भाव फैलाए गा।
ईश प्रेम में प्रेम सन्देशा घर घर ले कर जाएगा।।

प्रश्न :

मुझे बता ऐ सच्चे राही हुआ किधर से आना है।
कितनी देर का डेरा यां है और किधर को जाना है।।

उ० :

जन्नत से मैं आया प्यारे, जन्नत ही को जाना है।
कितने समय का डेरा या है, नहीं किसी ने जाना है।।

प्रश्न :

बात तुम्हारी सच है राही इसको हमने माना है।
यहां से जाना ईश भेद है ईश भेद को जाना है।।
यही कहो जन्नत क्यों छोड़ी जन्नत ही जब जाना है।
कष्ट भरा यह देश है राही कष्ट ही यहां उठाना है।
मक्खी मच्छर खटमल को रक्त, अपना यहां चुसाना है।
गर्मी सर्दी चहटा बोदा धूप यहां पर खाना है।।
रोग तो ऐसे भयंकर जिनका नहीं ठिकाना है।
ईर्षा कपट लड़ाई झगड़ा पारसपरिक लड़ाना है।
यहां का रहना सोच लो राही दुख पीड़ा अपनाना है।
ऐसे देश में रहना राही मूर्खता अपनाता है।।

उ० :

मित्र मेरे तुम सत्य कहे हो, यहां तो दुख ही पाना है।
पर अपनी मर्ज़ी आया नहीं ना अपनी मर्ज़ी जाना है।।
कैसे आया सुनो कहानी, अब तो मुझे सुनाना है।
एक ब्रह्म है समस्त सृष्टि का इसको नहीं भुलाना है।।
अज़ाज़ील था आग से पैदा दादा आदम मिट्टी से।
अज़ाज़ील था बड़ा घमण्डी दादा नम्र सृष्टि से।।
परन्तु श्रेष्ठ थे दादा आदम रब की सारी सृष्टि से।
सर्वश्रेष्ठ थे पीठ में उनकी रब की समस्त सृष्टि से।।
प्राण पड़े जब दादा जी में उठ बैठे वह फुर्ती से।
ईशादेश हुआ फिर सबको, नत मस्तक हो जल्दी से।।
सभी झुके आदम के आगे हुआ न सज्दा घमण्डी से।
यूं अज़ाज़ील शैतान बना वह देखो अपनी करनी से।।
कारण उसने रब से बताया आग है ऊंची मिट्टी से।
चल निकल यहां से तुच्छ है तू कहा रब ने फिर तो घमण्डी से।।
वहां ऊंच नीच की बात न थी बस आज्ञापालन करना था।
वह गया निकाला जन्नत से, हां ईश्वर को यह करना था।।
विन्ती कर ईश्वर से बोला निकला मैं अपमान से।
छूट मिले तो बदला लूं मैं आदम की सन्तान से।।
रब ने कहा है छूट तुझे जा बदला ले इन्सान से।
जो हैं मेरे सच्चे बन्दे डरें न तुझ शैतान से।।
दादा दादी थे जन्नत में सुख का जहां ख़ज़ाना है।
दादा की हम पीठ में थे सब पता न था कहां जाना है।।
पीठ से इक दिन रब ने निकाला और कहा यह बताना है।
क्या मैं हूं तुम्हारा रब्ब नहीं हां उत्तर सब को सुनाना है।।
सब बोले हां हां क्यों हैं नहीं सर अपना यहां झुकाना है।
तब होगी परीक्षा रब ने कहा कि खोटा खरा दिखाना है।।
दादा दादी जन्नत में थे एक वृक्ष था जन्नत में
पास न जाना उसके कभी तुम, रब ने कहा था जन्नत में।।
दूर थे उससे दादा दादी बहुत दिनों तक जन्नत में।
इक दिन दादा से कोई बोला पेड़ जो है वां जन्नत में।।
खाए जो उसमें से कुछ भी रहे हमेशा जन्नत में।
क़सम भी खाली उसने ताकि रहें न दादा जन्नत में।।
शत्रु को भूले दादा आदम वृक्ष से खाया जन्नत में।
वस्त्र हीन हो बैठे फिर वां दादा दादी जन्नत में।।
रब ने पूछा क्यों ऐ आदम पेड़ से खाया जन्नत में।
क्या कहा न था तुम दोनों से उस पास ना जाना जन्नत में।।
रो रो बोले दादा जी ऐ मेरे रब हां भूल हुई।
भूल हुई रब भूल हुई अब क्षमा करो रब भूल हुई।।
रब बोले अब नीचे जाओ हां हां तुम से भूल हुई।
एक समय तक रहना वहां है अगर्चि तुम से भूल हुई।।
फिर दादा उतरे लंका में और दादी उतरी जद्दा में
अब दादा रोएं लंका में और दादी रोंए जद्दा में।।

एक समय तक रोए दोनों बिलक बिलक इस दुन्या में।
क्षमा किया फिर रब ने उनको दोनों मिले फिर मक्का में।।
कहते हैं अरफ़ात में मिलकर दोनों फिर प्रसन्न हुए।
सन्तनिक प्रणाली पर फिर दोनों अति प्रसन्न हुए।।
निकल निकल कर पीठ से उनकी हम भी फिर प्रसन्न हुए।
अपना अपना जीवन पाकर सब ही तो प्रसन्न हुए।।
अज़ाज़ील ले सेना अपनी पड़ा हमारे पीछे फिर।
नबियों को फिर भेजा रब ने आए आगे पीछे फिर।।
पहले नबी थे दादा आदम शीस थे उनके पीछे फिर।
लेके संदेशा आए हज़ारों तब तो आगे पीछे फिर।।
ले कुर्आन मुहम्मद आए रब की उन पर रहमत हो।
अन्तिम वह सन्देशा लाए रब की उन पर रहमत हो।।
सारे जगत के लिए वह आए रब की उन पर रहमत हो।
रहती दुन्या तक को आए रब की उनपर रहमत हो।।
सर्व सृष्टि में उत्तम आए रब की उनकी रहमत हो।
सब पर रहमत बन कर आए रब की उन पर रहमत हो।।
रब आदेश परीक्षा पत्र है आयु समय परीक्षण का।
पलभर पहले जा नहीं सकते पूरा समय परीक्षण का।।
जन्म से लेकर मरते दम तक पूरा सम बिताना है।
क्षण भर बाद ठहर नहीं सकते रब का यह फ़रमाना है।।
आज्ञाकारी शान्ति में हैं यां अच्छा वहां ठिकाना है।
दुख पीड़ा गर यहां है झेला पुरस्कार वां पाना है।।
आज्ञापालन किया है जिसने उसको जन्नत जाना है।
रब की अवज्ञा करने वाला दोज़ख उस का ठिकाना है।।
समझे अब क्यों आए यां क्यों किया यहां टिकाना है।।
अपनी मर्ज़ी आए नहीं ना अपनी मर्ज़ी जाना है।।
गर आज्ञाकारी ईश्वर का है जब तो सच्चा राही है।
रब की अवज्ञाकरने वाला सुन लो झूठा राही है।।

(पृष्ठ १६ का शेष)

संसार के अन्य धर्मों के इतिहास में उपासना का ऐसा ढंग कहीं नहीं मिला। अल्लाह तआ़ला के सामने हुज़ूरी (हाजिरी) की जो कैफ़ियत नमाज़ में है वह किसी और प्रकार सम्भव नहीं।

ख़ुद मदीना मुनव्वरा में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को सहाबा–ए–किराम अपने घर बुलाते और आप से निवेदन करते कि हमारे घर आकर किसी कोने में नमाज़ पढ़ा दीजिए ताकि वहीं हम भी अपनी नमाजें अदा करें।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

मैं तेरी महब्बत की सदा जोत जगाऊं

मौ० मुहम्मद सानी हसनी

या रब तु ही दाता है जो मांगूं वही पाऊं।
आया हूं तेरे दर पे तो महरूम न जाऊं।।
हो जिस में तु ही तू वह मुझे क़ल्बो नज़र दे।
वह सर तू मुझे दे जो तेरे दर पे झुकाऊं।।
जो रोए तेरे डर से वही दीद–ए–तर दे।
खुद रोऊं तेरे ख़ौफ़ से औरों को रुलाऊं।।
भर दिल को मेरे अपनी महब्बत से ख़ुदाया।
मैं लौ जो लगाऊ तो सदा तुझ से लगाऊ ।।
हर लहज़ा करूं ज़िक्र तेरा अपनी ज़बां से।
ले ले के तेरे नाम को मैं लुत्फ़ उठाऊं।।
हासिल हो सुकूं ता दमे आख़िर दिलो जां को।
या रब तेरी रहमत से कोई ग़म न उठाऊं।।
लब्रेज़ हो इस्लाम की अज़मत से मेरा दिल।
ता मर्ग मैं इस्लाम को सीने से लगाऊं।।
दे दौलते अन्मोल मुझे इल्मो अमल की।
उस दौलते अन्मोल को आ़लम पे लुटाऊं।।
दे दौलते अन्मोल मुझे इल्मो अमल की।
उस दौलते अन्मोल को आ़लम पे लुटाऊं।।
कर मुझ को अ़ता मिल्लते बैज़ा की इमामत।
हर गुमरहो बेराह को मैं राह दिखाऊं।
दे नूरे शरीअ़त दे मुझे इश्क़ जिगर सोज़।
मैं शीश–ओ–आहन को बहम करके दिखाऊं।
मालिक दे महब्बत तू मुझे शाहे उमम की।
जो खाके कफ़े पा मिले आखों से लगाऊं।।
इस दौर के ज़ुल्मत कद–ए–बुलहबी में।
हर एक कदम मुस्तफ़वी शम्अ़ जलाऊं।।
मैं बनके अबू बक्र रहूँ हक़ का निगहबां।
मैं बनके अ़ली ख़िरमने बातिल को जलाऊं।।
दे मुझ को दिले रूमी व सम्नानी व शिब्ली।
हर लम्हा तेरी याद से मैं दिल को बसाऊं।।
कर मुझ को अ़ता शौख़े मुजाद्दिद की अज़ीमत।
अकबर के हर फ़ित्न–ए–हाज़िर को मिटाऊं।।
दे सय्यिदे अहमद की मुझे दीनी हमीयत ।
मैं हक़ की बुलन्दी के लिए जान खपाऊं।।
या रब तू मुझे गर्म दिलो गर्म नफ़स कर।
मैं तेरी महब्बत की सदा जोत जगाऊं।।
जब तक कि रहूं ज़िन्दा तेरा बनके रहूँ मैं।
तेरी ही रज़ा लेके तेरे पास मैं आऊं।।

दिल का दर्द एवं होमियोपैथिक दवाएं

डा० एस०एम० आरिफीन

हृदय रोग का नाम सुनकर शुरू हो जाता है चिन्ता का दौरा बेकार की चिन्ता पालने से बेहतर है कि हृदय रोग के बारे में कुछ तथ्यों को जान ले। हृदय रोग क्या है, क्यों होता है और इससे कैसे बचा जाये?

हृदय रोग दो प्रकार का होता है

१. जन्म जात २. जन्म के पश्चात् होने वाला हृदयरोग

१. जन्मजात अर्थात कांजेनिटल हार्ट डिजिज (**Congeuital Heart Diseases**) यह बिमारी बच्चे को जन्म से ही मिलती है। गर्मवस्था में ही बच्चे के हृदय में विकृति आ जाती है। रोग की इस अवस्था को दवाओं के जरिये ठीक नहीं किया जा सकता। यह अवस्था एक प्रकार का मेन्यू, फेक्चरिंग डिफेक्ट (**Manufacturing defect**) है। इस लिए इस का उपचार आपरेशन ही है।

२. जन्म के पश्चात होने वाले हृदय रोग के कई प्रकार है। इसे अंग्रेजी में एक्वायर्ड हाट डिजिज (**Acquired Heart Diseases**) कहते हैं वैसे मुख्यतः इसके तीन प्रकार हैं।

(a) रूमेटिक हार्ट डिजिज : **Rheumatic Heart Disease** यह बीमारी टांसिल में स्टैपटो कोकस बैक्टिरिया (**Strepto Coccus Bacteria**) के संक्रमण के बाद होती है। इसके प्रभाव से पहले जोड़ों में सूजन आ जाती है। दर्द होता है और जोड़ों की मोबिलिटी (**Mobility**) कम हो जाती है। कुछ दिन बाद दर्द एक स्थान बदल कर दूसरे जोड़ों में चला जाता है यही सही वक्त है जब आप होम्यो उपचार द्वारा इस रोग को न केवल आगे बढ़ने से रोक सकते हैं बल्कि जड़मूल से समाप्त कर सकते हैं। अन्यथा यह रोग चलकर हृदय के वाल्व को खराब कर देता है।

हृदय में चार वाल्व होते हैं। इनमें से दो वाल्व माइट्ल (**Mitral**) एवं एओराटिक (**Aoratic**) इसके शिकार होते हैं या तो वाल्व सिकुड़ जाते हैं या फैल जाते हैं। एक बार जब वाल्व क्षतिग्रस्त हो जाते हैं तो यह कोई भी पैथी से ठीक नहीं होता केवल एक मात्र उपचार सर्जरी है।

जब गला खराब होता है या जोड़ों में तकलीफ होती है उस समय उचित होमियो उपचार ले लिया जाए तो रूमेटिक हार्ट डिजिज की नौबत नहीं आती। इस रोग की कुछ मुख्य–मुख्य औषधियां इस प्रकार हैं।

कालमिया लेटिफोलिया (**Kalmia Lat**) इस दवा का लक्षण यह है कि दर्द ऊपर से नीचे की ओर चलता है। साथ में सुन्नपन भी रहता है। जोड़ों में दर्द के साथ बुखार व मतली भी हो सकती है। अगर गर्दन से उतरते हुए दर्द कंधों के अस्थि कल्प तक जाये तो कालमिया को याद रखना चाहिए, कालमिया का दर्द आगे झुकने पर और नीचे की ओर देखने पर बढ़ता है।

नाजा (**Naja**) इस दवा की मुख्य किया हृदय के वाल्व पर होती है। हृदय के वाल्व की यह एक तरह से स्पेसिफिक दवा (**Specific medicine**) है। इसका विशेष लक्षण है चलने में सांस भरना और बांयी करवट लेटने पर तकलीफ बढ़ना यह अगर ६ शक्ति (**Naja 6**) में लेना चाहिए।

कन्वेलेरिया (**Convallaria**) नाजा के भांति यह भी हृदय के वाल्व की एक उपयोगी दवा है। इसका विशिष्ट लक्षण यह है कि रोगी को ऐसा महसूस होता है मानो दिल बायीं ओर ही नहीं पूरी छाती में धड़क रहा है। कभी–कभी धड़कन की तेजी बढ़ जाती है। कभी ऐसा लगता है कि धड़कन रूक गई है और पुनः चालू हो जाती है। इसे मदर टिंचर के रूप में या ६ शक्ति में लिया जा सकता है। हायपर टेक्सी हार्ट डिजिज (**Hyper tensive Heart Disease**) इसे आम बोल चाल भाषा में ब्लड प्रेशर (**Blood Pressure**) या रक्त चाप कहते हैं। रक्तचाप भी बढ़ना हृदय रोग का कारण बनता है। इसके भी दो प्रकार होते हैं। पहला ज्ञात कारणों से जैसे थायराइड ग्लैंड (**Thyroid Gland**) या किडनी की बीमारी के कारण और दूसरा अज्ञात कारणों से ६० प्रतिशत लोगों में इस प्रकार का रक्तचाप का बढ़ना पाया जाता है। इसे प्राथमिक (**Primary**) हायरटेंशन कहते हैं। इसके लक्षण हैं सिरदर्द, बेचैनी, चक्कर, मतली, अनिद्रा,

चलते वक्त सीने में भारीपन या सांस फूलना। ३० से ४० प्रतिशत मरीजों में कोई लक्षण होते ही नहीं। सिर्फ रक्तचाप नापने पर मालूम पड़ता है कि उनका रक्तचाप बढ़ा हुआ है। रक्तचाप के लिए निम्न औषधियां अत्यन्त उपयोगी हैं –

राल्फीया ससटिना (**Rauwalfia serp**) इसे आयुर्वेद में सर्पगंधा के नाम से जाना जाता है। यह उच्च रक्तचाप को अत्यन्त उपयोगी दवा है। इसे मदर टिंचर की १० से १५ बूंदे आधा कप पानी में लेकर दिन में तीन बार, रक्तचाप को नियंत्रित रखा जा सकता है।

विस्कम अल्बम (Viscum Alb)

यह दवा रक्त वाहिनियों को फैलाकर रक्तचाप सामान्य करती है। इसका मुख्य लक्षण रक्तचाप के साथ चक्कर या कान में सीटी सी आवाज होती है। इसे भी मदर टिंचर अथवा ६ शक्ति में उपयोग किया जा सकता है।

ग्लोनाइन (**Glonoine**) रक्तचाप के साथ सिरदर्द इसका मुख्य लक्षण है। मरीज को अपने सिर की नलिकाओं में खून दौड़ते हुए महसूस होता है। स्त्रियों में राजरोध (**esuksikt Menopause**) के समय होने वाले रक्तचाप की यह अत्युत्तम दवा है।

इसके अलावा बेरायटामूर, आरम मेट, नेट्ममयूर और प्लम्बम् भी लम्बे समयय तक लेने पर उपयोगी दवायें पाई गई हैं।

इसकेमिक हार्ट डिजिज (Ischaemic Heart Disease)

इसे सामान्य भाषा में हृदय रोग कहते हैं रक्तवाहिनियों में खून में थक्के होने से हृदयरोग या रक्तवाहिनियों के सिकुड़ने से यह रोग होता है। रक्तवाहिनी सिकुड़ जाये तो इसे एंजाइना पिक्टोरिस कहते हैं। एंजाइम में हृदयशूल होता है जो लगातार नहीं बल्कि रूक–रूक कर या यदाकदा होता है। अगर खून के थक्के की वजह से रक्तवाहिनी पूरी तरह बंद हो जाए तो रक्त का प्रवाह रूक जाता है। इसे हार्ट अटैक या मायोकार्डियल इन्फ्राक्शन कहते हैं। रक्त नलिकाओं में यह अवरोध मुख्यतः कोलेस्ट्राल जमा होने की वजह से होता है, लेकिन कोलेस्ट्राल जमा होने की मुख्य वजह अधिक चिकना, घी, मीट आदि, तनाव, धूम्रपान, शराब, आलस्य, हैरिडिटी, मधुमेह या उच्च रक्तचाप इत्यादि है।

एंजाइना पिक्टोसि (**Angine Pectosis**) इसका मुख्य लक्षण है चलते वक्त सीने में बायीं ओर दर्द होना आराम करते वक्त दर्द का बंद हो जाना। दर्द सिर्फ सीने में बाएं तरफ ही हो, यह जरूरी नहीं। सीने के मध्य, बाएं हाथ या दोनों हाथ, गर्दन या बाएं कंधे में भी हो सकता है। इसकी मुख्य दवाएं एकोनाइट (**Aconite**), **Arsenic**, स्पाइजेलिया (**Spigelia**) कुप्रम (**Cuprem**) और क्रेटोगस (**Crategus**) है।

Aconite में हृदय की गति तेज होती है। इसमें दर्द मुख्यतः बाएं कंधे में होता है। रोगी कहता है। डाक्टर साहब मेरी धड़कन बढ़ रही है। उंगलियों में झिनझिनी आ रही है। दर्द के कारण बेचैनी तथा डर के मारे कभी–कभी बेहोशी आ जाती है। इसे ३० से २०० शक्ति में प्रयुक्त किया जाता है।

Arsenic Alb इसके अधिकांश लक्षण एकोनाइट से मिलते जुलते है। लेकिन दर्द बजाए बाएं कंधे के गर्दन और सिर की गुद्दी के पीछे होता है। इसमें हृदय की गति बहुत बढ़ जाती है। इसे ६ से ३० शक्ति में प्रयुक्त करना चाहिए।

स्पाइजेलिया (**Spigelia**) इसमें बांए सीने में दर्द और चलने से बढ़ना। बार–बार धड़कन बढ़ना। नाड़ी अनियमित। दर्द का सीने से एक या दोनों में फैलना। गर्म पेय पीने से आराम। दायीं करवट लेटने से आराम तथा सिर ऊंचा रखकर सोने से आराम।

कुपम मेट (**Cuprem Met**)

इसने नाड़ी धीमी गति से चलती है। सीने में दर्द के साथ हृदय में घबराहट रहती है। रोगी को पसीना निकलने से आराम महसूस होता है साथ ही मतली भी आती है। दर्द सिर्फ बायीं ओर होता है।

क्रेटेगस (**Crataegus**) इसमें थोड़ा सा चलने से सांस फूलती है। लेकिन नाड़ी की गति तेज नहीं होती। इसे मदर टिंचर के यप में १० से १५ बूंद आधा कप पानी में दिन में तीन बार लेना चाहिए। क्रेटेगस होमियोपैथी में हृदय का टानिक (**Heart Tonic**) समझा जाता है।

●●●

पाप है रखना किसी से दुर्विचार।
दुर्विचारी तो है दानव का शिकार।।
अपने भाई से तू रख अच्छा विचार।
इस नियम से होगा मानव का सुधार।।
इक भिखारी कह रहा था कर भला।
ले माला औरों का करके तू भला।।
मेरे स्वामी कर दे तू उसका भला।
दीन हीनों का जो करता है भला।।

आओ उर्दू सीखें

उर्दू अक्षरों के लिखने के नियम

इदारा

पिछले पाठ में आरंभ में शोशे मिलाने की एक तालिका प्रस्तुत की गई थी, आज दूसरी तालिका प्रस्तुत है।

हि०	उ०	हि०	उ०	हि०	उ०	हि०	उ०	हि०	उ०	हि०	उ०	हि०	उ०
ता	طا	आ	عا	फ़ा	فا	का	کا	ला	لا	मा	ما	हा	ہا
अ़ब	طب	अ़ब	عب	फ़ब	فب	कब	کب	लब	لب	मब	مب	हब	ہب
तज	طج	अ़ज	عج	फ़ज	فج	कज	کج	लज	لج	मज	مج	हज	ہج
तद	طد	अ़द	عد	फ़द	فد	कद	کد	लद	لد	मद	مد	हद	ہد
तर	طر	अ़र	عر	फ़र	فر	कर	کر	लर	لر	मर	مر	हर	ہر
तस	طس	अ़स	عس	फ़स	فس	कस	کس	लस	لس	मस	مس	हस	ہس
तस	طص	अ़स	عص	फ़स	فص	कस	کص	लस	لص	मस	مص	हस	ہص
तत	طط	अ़त	عط	फ़त	فط	कत	کط	लत	لط	मत	مط	हत	ہط
तअ़	طع	अ़अ़	عع	फ़अ़	فع	कअ़	کع	लअ़	لع	मअ़	مع	हअ़	ہع
तफ़	طف	अ़फ़	عف	फ़फ़	فف	कफ़	کف	लफ़	لف	मफ़	مف	हफ़	ہف
तक़	طق	अ़क़	عق	फ़क़	فق	कक़	کق	लक़	لق	मक़	مق	हक़	ہق
तक	طک	अ़क	عک	फ़क	فک	कक	کک	लक	لک	मक	مک	हक	ہک
तल	طل	अ़ल	عل	फ़ल	فل	कल	کل	लल	لل	मल	مل	हल	ہل
तम	طم	अ़म	عم	फ़म	فم	कम	کم	लम	لم	मम	مم	हम	ہم
तन	طن	अ़न	عن	फ़न	فن	कन	کن	लन	لن	मन	من	हन	ہن
तू	طو	अ़ू	عو	फ़ू	فو	कू	کو	लू	لو	मू	مو	हू	ہو
तह	طہ	अ़ह	عہ	फ़ह	فہ	कह	کہ	लह	لہ	मह	مہ	लह	ہہ
ती	طی	अ़ी	عی	फ़ी	فی	की	کی	ली	لی	मी	می	ही	ہی
ते	طے	अ़े	عے	फ़े	فے	के	کے	ले	لے	मे	مے	वे	ہے

मुहर्रमुलहराम इतिहास के पन्नों से

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

मुहर्रम का सम्मान तथा महत्व इसलिए भी है कि इस मास में बड़ी महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं और बड़े महत्वपूर्ण कार्य हुए। जो इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं उनमें से कुछ का उल्लेख हम यहां कर रहे हैं।

१. इसी माह में हज़रत आदम (अ़लै०) को जिन्दा आसमान पर उठाया गया।

२. इसी माह में हज़रत आदम (अ़लै०) की तौबः कुबूल हुई।

३. मुहर्रम के ही महीने में हज़रत नूह (अ़लै०) की कश्ती जूदी पहाड़ पर रूकी।

४. इसी माह में हज़रत याकूब (अ़लै०) की बीनाई लौटाई गई।

५. इसी माह में हज़रत यूसुफ (अ़लै०) को जेल से छुटकारा मिला।

६. इसी माह में मक्का वाले कअ़बः पर गिलाफ चढ़ाते थे।

७. इसी माह में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को नमरूद की आग से नजात मिली थी।

८. इसी माह में हज़रत ईसा (अ़लै०) को ज़िन्दा आसमान पर उठाया गया।

९. इसी माह में हज़रत ईसा (अ़लै०) ने फ़िरऔन से नजात पाई।

१०. इसी माह में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का निकाह हज़रत सफ़ीया (रज़ि०) से हुआ।

११. इसी माह में हज़रत उमर फ़ारूक (रज़ि०) की शहादत हुई।

१२. इसी माह में हज़रत अ़ली(रज़ि०) का निकाह हज़रत फातिमा रज़ि० से हुआ।

१३. इसी माह में हज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) का निकाह हज़रत उम्मे कुलसूम (रज़ि०) से हुआ।

१४. इसी माह में ख़िलाफ़ते अ़ली (रज़ि०) काइम हुई।

१५. इसी माह में ख़िलाफ़ते उस्मानिया काइम हुई।

१६. इसी माह में इमारते मुआविया भी काइम हुई।

१७. जन्गे सिफ़्फ़ीन भी इसी माह में हुई।

१८. इसी माह में उम्मे जुवैरिया बिन्त हारिस की भी वफ़ात हुई।

१९. हज़रत अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) की इसी माह में वफ़ात हुई।

२०. इसी माह में हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) ने भी वफ़ात पाई।

२१. वकिया कर्बला भी इसी माह में हुआ।

२२. ख़लीफ़ा हारून रशीद का क़त्ल और फिर मामून को ख़िलाफ़त इसी माह में हुआ।

२३. इसी माह में फरीदुद्दीन शकर गंजे की वफात पाई।

इसी प्रकार और भी अनेकों घटनाएं इस माह में घटीं जिस से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह माह एक ऐतिहासिक फज़ीलत वाला माह है फिर इसी को हिजरी कैलेन्डर का पहला महीना मान कर इसकी महत्वता को और बढ़ा दिया गया।

इस्लामी कैलेण्डर :

इस्लाम चूंकि जिन्दगी के हर क्षेत्र में रहनुमाई करता है इस लिए इस्लामी कैलेंडर की शुरूआत भी इसी माह से हुई अर्थात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मक्का से मदीने हिज़रत की घटना को महत्वपूर्ण मानते हुए इसी मुबारक घटना से इस्लामी कैलेण्डर की शुरूआत करने को तमाम सबाहा ने पसंद फरमाया।

वैसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ज़िन्दगी का तो हर भाग रौशन सितारा है जैसे आप सल्ल० की पैदाइश का दिन, आप सल्ल० के नबी बनाये जाने के एलान का वर्ष, ग़ज़व–ए–बद्र, फतेह मक्का आदि।

इन तमाम घटनाओं के होते हुए केवल साल की शुरूआत के लिए हिजरते नबवी ही को क्यों महत्वपूर्ण माना गया? कारण स्पष्ट है कि इस्लाम में हक़ का प्रचार व प्रसार और उसको मज़बूती से कायम करने में हिजरत–फी सबीलिल्लाहि को बड़ा महत्व प्राप्त है। फिर सहाब–ए–किराम के पारस्परिक परामर्श से यह बात तो हुई अतः इस में ख़ैर ही खैर है।

हम मुसलमानों को चाहिए कि इस्लामी महीने याद रखें और अपने निजी कामों में इस्लामी तारीखें लिखें और हिज्री कैलेन्डर अपनाएं।

सुर्ख़रू होता है इन्सां,
ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना,
पत्थर पे पिस जाने के बाद।।

इस्लामी सज़ायें (दण्ड) और उनकी हिकमत

मौ० मुहम्मदुल हसनी

फिर हमने उसको एक शिक्षाप्रद घटना बना दिया उन लोगों के लिए भी जो उस क़ौम के समकालीन थे और उन लोगों के लिए भी जो उनके बाद के काल में आते रहे और सदुपदेश बनाया खुदा से डरने वालों के लिए। (अलबक़र:,६६)

यह आयत सूरह बक़र की है और इसमें बनी इस्राईल की सख़्त सज़ा (दण्ड) के बाद उस की हिकमत यह बयान की गयी है कि इससे दूसरी आने वाली नसलों (वंश) को ऐसी इबरत (सबक़) हासिल हो और उन पर भय तारी हो जाये कि फिर किसी हाथ को वह कार्य करने का साहस न हो और जिसके दिल में, अल्लाह का डर और खुदा के आदर का ख़याल हो इससे उनको सबक़ और नसीहत प्राप्त हो यानी एक तरफ़ अपराधियों और अन्याय करने वालों का साहस इतना पस्त हो जाये कि वह फिर किसी अपराध का इरादा न करें और दूसरी तरफ ईमान वालों को ऐसी नसीहत और पाठ मिले कि उनके दिल में अपराध और पाप का ख़याल न आये।

अपराध और उसके दण्ड पर आज कल की दुन्या (संसार) में बड़ी ताक़त व धन खर्च किया जा रहा है और इस्लामी दण्डों को अन्याय तथा अत्याचार कहा जा रहा है। लेकिन इस्लाम ने अत्याचार और उसकी सज़ा (दण्ड) की एक कल्पना पेश की है। ऐसी कल्पना आज तक किसी निज़ाम (विधान) ने प्रस्तुत नहीं की। यह स्पष्ट है कि मनुष्य और संसार को पैदा करने वाले ने जो सज़ा रखी है और जो उसकी हिकमत ब्यान की है उसके मुक़ाबले में स्वयं मनुष्य के बनाये दण्डों (सज़ाओं) की क्या हैसियत (प्रतिष्ठा) हो सकती है। यह इन्सान की बड़ी मूर्खता की बात है कि वह अपनी बनायी सज़ाओं को (जिन का वह बार–बार उलट फेर करता रहता है) अपने पैदा करने वाले और पूजा के योग्य भगवान की सज़ाओं से बेहतर समझे। उन सज़ाओं की स्पष्ट विभूति यह है कि थोड़ी सी सज़ाओं के बाद ही समाज में एक अच्छा परिवर्तन आता है और यदि उस पर लगनके साथ कार्य किये जाये तो पूरा समाज अमन व शान्ति के दामन में आयेगा उसके उदाहरण और नमूनों से इस्लामी इतिहास भरा पड़ा है और उसका कोई बदल हो नहीं सकता।

इन सज़ाओं की एक अ़जीब और ख़ास बरकत (विभूति) यह है कि हमारी बहुत सी कमज़ोरियों के साथ भी उसके लक्ष्य ज़ाहिर होते हैं। इस का एक स्पष्ट उदाहरण सऊदी अरब का है। सऊदी अरब के समाज को इस्लामी समाज नहीं कहा जा सकता लेकिन फिर भी वहां आज अपराध की तादाद इतनी कम हो चुकी है जो किसी अन्य देश में इसका सोचना भी आसान नहीं है। इसके अतिरिक्त अमरीका को ही ले लीजिए जो आज की सभ्यता का अपने को इमाम समझता है। इस समय अमरीका अपराधों और पापों का सबसे बड़ा केन्द्र है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि हमें ideal सोसाइटी व समाज का इन्तज़ार नहीं करना है और न इसके इन्तेज़ार में रहना चाहिए। हां अपराध व पाप का कारण जानना और उसको रोकना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा न हो कि एक ओर वे राह रवी का सामान उपलब्ध किया जाए। दूसरी ओर यह कहा जाए कि सावधानी का दामन भीगने न पाये यदि एक हाथ के कटने और टूटने से हजारों हाथ कटने और टूटने से बच जाते हैं और लोग सुरक्षित हो जाते हैं। एक फांसी से सैकड़ों जान हलाकत से और न जाने कितनी इसमतदरी (ब्लातकार) से सुरक्षित हो जाते हैं तो इन दण्डों को अत्याचार नहीं बल्कि दया और रहम कहा जायेगा।

इसके अतिरिक्त इन दण्डों को शरीअ़त (धर्मशास्त्र) इस्लामीया ने जितने प्रतिबंध (नियम) और जितनी गवाहियों और ऐसे तरीक़–ए–कार से सुरक्षित कर दिये हैं जिससे अन्याय और अत्याचार हो ही नहीं सकता और न इसकी समभावना है। केवल एक उदाहराण ले लीजिए। क़ज़्फ़ (किसी पर पाप का इल्ज़ाम लगाना) इसकी ऐसी सज़ा है जिसके बाद कोई किसी पर आसानी से आरोप नहीं लगा सकता। दूसरे स्थान पर यह शिक्षा भी दी गई है कि पापियों के लिए जो यह सज़ा दी है उसके लिए हमारे दिल में कोई रहम (दया) न आये इसलिये कि यह सज़ा अल्लाह की तरफ से है।

(चोर और चोरनी के हाथ काट दो और यह बदला उसका है जो उन्होंने किया। अल्लाह ग़ालिब और हिकमत वाला है।) (अलमाइद:, ३८)

सूरह नूर में कुर्आन की सज़ाओं के लिए आता है कि –

तुम्हारे अन्दर इन दोनों के लिए नर्मी (सहानुभूति) का कोई ख़याल न आये। यदि तुम्हारा आख़िरत पर विश्वास है।

नींद कुदरत का एक वरदान

हबीबुल्लाह आज़मी

मौत का एक दिन मुऐयन है।
नीद क्यों रात भर नहीं आती।।
(ग़ालिब)

कवि का हृदय व्याकुल है उसे नींद नहीं आ रही है। वह दिल को समझाता है कि मौत से तो बढ़कर कोई मुसीबत नहीं है उसके आने का एक दिन निश्चित है। वह न एक पल पहले आएगी न एक पल बाद अतः चिन्ता छोड़ कर शांति के साथ सोजाना चाहिए।

वास्तविकता यही है कि नींद कुदरत का एक बहुत बड़ा वरदान है।

नीद से दिमाग़ को आराम मिलता है। दिन भर की मेहनत के बाद सोने से जिस्म की थकान दूर हो जाती है। रात को नीद न आना एक बीमारी है। यदि नीद बराबर न आए तो इंसान का दिमाग़ी संतुलन बिगड़ जाता है। दूसरे शब्दों में नीद स्वास्थ के लिए अनिवार्य है। कुर्आन मजीद में आराम तथा विश्राम के लिए विभिन्न आयतों में निर्देश दिये गए हैं। सूरः अनआ़म की आयत नम्बर ६६ में बताया गया है कि रात को आराम के लिए बनाया गया है। इसी प्रकार सूरः यूनुस में फरमाया गया (अनुवाद) "वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि इस में सकून (विश्राम) प्राप्त करो। रात को आराम करने के इसी प्रकार के संकेत सूरः नबा आयत–६ सूरः मोमिन आयत –६१ और सूरः अलक़सस आयत–७५ में मिलते हैं।

रसूले अकरम का कथन है कि इंसान के शरीर का भी हक़ है, अर्थात इंसानी जिस्म का हक़ आवश्यकतानुसार विश्राम करना भी है।

सोने का तरीक़ा – सख़्त बिस्तर पर सोना चाहिए दाएं करवट लेटना स्वास्थ के लिए लाभदायक है क्योंकि दाएं तरफ़ लेटने से पाचन क्रिया में तेज़ी आ जाती है। बाएं करवट अधिक देर तक लेटने से दिल पर अधिक बोझ पड़ता है। उलटा लेटना स्वास्थ के लिए हानिकारक है। रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्हीं नियमों का पालन करते थे। आप सल्ल० इशा की नमाज़ के बाद जागना पसन्द नहीं फ़रमाते थे। आप सल्ल० का कथन था कि इशा की नमाज़ के बाद दो ही सूरतों में जागना चाहिए या तो खुदा की याद में या घरवालों से आवश्यक वार्तालाप के लिए। चिकित्सीय तजुर्बे से यह बात सामने आई है कि सख्त बिस्तर के प्रयोग से कमर के दर्द होने की कम सम्भवना होती है।

लेटने में करवट लेना भी ज़रूरी है मुख्यतः ऐसे मरीज़ को जो फालिज ग्रस्त हो तो कुछ घंटों के बाद करवट दे दिया करें ताकि एक ही करवट पड़े रहने से घाव न हो जाए। कुर्आन पाक में कहफ़ वालों का ज़िक्र आया है जो कई सौ साल तक सोते रहे अल्लाह तआ़ला कुर्आन में फ़रमाता है कि हम उनको करवट देते रहते थे।

सोने की तैयारी – हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खाली पेट सोने से मना किया है। ख़ाली पेट सोने से शीघ्र बुढ़ापा आता है। स्वास्थ विशेषज्ञ भी खाली पेट सोने को हानिकारक बताते हैं, इससे मेदे में अलसर हो जाने की अधिक सम्भावना होती है। सोने से पहले मुंह आदि धो लेना चाहिए क्योंकि इससे दिनभर की धूल मिट्टी जो शरीर और आंखों में जमा हो जाती है साफ़ हो जाती है जिस से जिल्द के ख़राब और आंखों की बीमारी का डर होता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कथन है कि सोने से पहले मिसवाक करके वज़ू कर लेना चाहिए। चिकित्सीय सलाह के अनुसार मुंह की सफ़ाई और दांतों की सफाई कर लेने से कीटाणु को फलने फूलने का अवसर नहीं मिलता।

कुर्आन और सुन्नत के अनुसार सोने के कुछ निर्देश

सोने का समय रात को ही रखा जाए लेकिन दोपहर के समय कुछ देर सोने में कोई हर्ज नहीं। रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया दोपहर को ख़ाने के बाद क़ैलूला (कुछ देर सो लेना) किया जाए और रात को खाने के बाद चलहक़दमी से भोजन की पाचन क्रिया को सहायता मिल जाती है।

२. रात को जल्द सोएं और प्रातः जल्द उठने की आदत डालें।

३. बिस्तर न अधिक नर्म हो कि प्रातः उठने का मन ही न करे न इतना सख़्त कि नीद ही न आए।

४. ख़ाली पेट न साएं।

५. खाने से पहले हाथ मुंह धोलें।

६. नशा या नीद की गोलियों से परहेज़ करें।

सोने के वक़्त की दुआ
अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूत व अह्या।

युवा धर्म के रक्षक

मु०अ़ली जौहर मुजफ्फर नगरी

महब्बत मुझे उन जवानों से है
सितारों पे जो डालते हैं कमन्द

विश्व के हर समुदाय की उन्नति, सामाजिक व्यवस्था का सुधार बिगड़ती हुई स्थिति का संभालना, डूबते हुए को किनारे लगाना, युवाओं पर निर्भर है क्योंकि युवा ही राष्ट्र का भविष्य होते हैं किसी क़ौम के धार्मिक भविष्य की निर्भरता भी उसके युवा जनों पर होती है। यदि उस क़ौम के युवा अपने धर्म के प्रति जाग्रित हैं तो उस कौम में धर्म फले फूलेगा वरना उस क़ौम से निकल कर दूसरी क़ौम में चला जाएगा। अल्लाह तआ़ला को भी युवा अवस्था की इबादत पसन्द है हदीस शरीफ में संकेत मिलता है कि जो युवा अल्लाह तबारक व तआला के मार्ग पर चलता है तथा मानव सेवा में अपना जीवन व्यतीत करता है वह प्रलय के दिन अ़र्श के साये में रहेगा। इस्लाम के अध्ययन से मालूम होता है कि इस्लाम के साहसी युवाओं ने बड़े–बड़े कीर्ति के कार्य किये हैं हज़रत अ़ली रज़ि० ने हिजरत की रात्रि में अकेले हज़रत मुहम्मद स० के बिस्तर पर लेट कर बहादुरी का परिचय दिया बद्र के युद्ध में एक युवा अ़म्र बिन अबी वक्क़ास विनती करके युद्ध में शामिल हुए और बहादुरी और वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए वह भी नवयुवक ही थे। जिन्होंने कुरैश के सरदार इस्लाम के दुशमन, अबूजिहल की हत्या करके बहादुरी का परिचय दिया था, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० को इस्लामी इतिहास कभी भुला नहीं पायेगा जिन्होंने १७ वर्ष की आयु में एक विशाल दल का नेतृत्व किया, मुस्लिमा बिन अ़क़बा रज़ि० ने तेरह वर्ष की आयु में इस्लाम के दुश्मनों से मुक़ाबला किया, इतिहास के महान हीरो मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी जो एक वृद्ध महिला की फरयाद पर अत्याचार मिटाने के लिए अपनी सेना लेकर अपनेदेश से निकला और अत्याचार के विरुद्ध १७ वर्ष की आयु में सिन्द की भूमि पर सत्य तथा न्याय का ध्वज लहराया, कादसिया के अवसर पर एक युवा फटे पुराने वस्त्र धारण किये क़ालीन को रौंदता हुआ रूस्तम के दरबार में जा घुसा और एक ऐतिहासिक वाक्य कहा जो रहती दुन्या तक सोने के अक्षरों से लिखने और इस्लाम के वीर सपूतों के लिए जीवित उदाहरण है उन्होंने कहा कि " अल्लाह तआ़ला ने हमें भेजा है ताकि हम जिसको अल्लाह चाहे बन्दों की पूजा व भक्ति से एक अल्लाह तआ़ला की उपासना की तरफ़ निकालें और अनेक धर्मों के अत्याचार व जुल्म से इस्लाम धर्म के न्याय की तरफ निकालें अगर तुम हमारी बात मान लेते हो तो ठीक है वर्ना हम तुमसे युद्ध करते रहेंगे यहां तक कि अत्याचार समाप्त हो और मानवता स्वतंत्रता पाए तथा सत्य स्थापित हो।, कुस्तुन्तुनिया के विजय युवा मो० फ़ातेह ने अत्याचारों के विरोध में २४ वर्ष कीआयु में कैसरे–रोम की राजधानी पर आक्रमण करके उसे पराजित किया और न्याय का राज्य स्थापित किया। महान सेनानी तारिक़ बिन ज़ियाद ने अल्लाह पर श्विास और खुद पर भरोसा करते हुए कश्तियों को जलाने का आदेश दिया और अपनी सेना को संबोधित करते हुए कहा "ऐ नौजवानों, ऐ इस्लाम के वीर सपूतों समुद्र तुम्हारे पीछे है और शत्रु तुम्हारे सामने है अगर विजयी हुये तो "ग़ाज़ी" होगे और मारे गये तो शहीद होकर जन्नत में जगह पाओ गे। युवाओं का इतना सुनना था कि शत्रुओं पर टूट पड़े और थोड़ी सी सेना ने स्पैन पर इस्लाम का शान्तिमय ध्वज लहरा दिया। महान सम्राट सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की सत्य कथा एक अनोखा इतिहास का रूप है जब किब्ल–ए–अव्वल अर्थात वैतुल मक़दिस सलीबियों के कब्ज़े में चला गया और फिलिस्तीन की भूमि मुसलमानों के रक्त से लाल हुई तो इस सम्राट ने मुसलमानों को अन्याय व अत्याचार से बचाने के लिए और बैतुल मकदिस की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी और अन्त में विजयी हुए। यह इस्लाम के कुछ युवाओं के उदाहरण हैं जिन्होंने अपना तन–मन–धन इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार के लिए निछावर कर दिया जिनका इतिहास में, एक स्थान है यही वो युवा हैं जिन्होंने राष्ट्रों पर विजय प्राप्त की और उन्हें अपने अधीन किया है, अत्याचार मिटा कर न्याय की बयार चलाई।

कुछ महत्वपूर्ण इस्लामी शहीदों की शहादत की तारीखें

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तारीख़े वफ़ात १२ रबीअुल अव्वल दिन सोमवार (दोशंबा) सन ११ हिज्री है।

पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात की तारीख़ २२ जुमादस्सानियः सन १३ हिज्रही है।

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत की तारीख़ पहली मुहर्रम सन् २४ हिज्री है।

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत की तारीख़ १८ ज़िल्हिज्जः सन ३५ हिज्रीहै।

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत की तारीख़ १७ रमज़ान सन् ४० हिज्री है।

पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत हसन (रज़ि०) की शहादत ज़ह्र (विष) के असर से २८ सफ़र सन् ५० हिज्री में हुई। अहले सुन्नत की किताबों में आप की शहादत की तारीख़ दर्ज नहीं है। यह तारीख़ शीआ़ हज़रात की क़िताब से ली गई है। आप ने रबीअुल अव्वल सन ४० हिज्री में खिलाफ़त हज़रत मुआ़वियः (रज़ि०) के हवाले कर दी थी। एक हदीस की रू से आपकी ख़िलाफ़त, खिलाफ़ते राशिदा है इसलिए मैं ने आप को पांचवा खलीफा लिखा।

बद्र की लड़ाई १७ रमज़ान सन० २ हिज्री में हुई जिस में १४ सहाब–ए–किराम शहीद हुए थे। उनका दर्जा बहुत ऊंचा है। उहद की लड़ाई ७ शव्वाल सन० ३ हिज्री में हुई जिसमें ७० सहाब–ए–किराम ने शहादत पाई इसी लड़ाई में हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के प्रिय चचा सय्यिदुश्शुहदा (सारे शहीदों के सरदार)हज़रते हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को भी शहादत मिली।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत जुमादल उख़रा सन० ७३ हिज्री में हुई।

मुहर्रम सन ६१ हिज्री में करबला की घटना घटी और १० मुहर्रम को हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ७० साथियों के साथ करबला के मैदान में शहीद कर दिये गये। इन शुहदा में हज़रत अबू तालिब के कुल (ख़ान्दान) के निम्न लिखित लोग शहीद हुए।

१. हज़रत हुसैन (रज़ि०), २. हज़रत जाफ़र, ३. हज़रत अ़ब्बास, ४. हज़रत मुहम्मद, ५. हज़रत उसमान, ६. हज़रत अबू बक्र पर अल्लाह की रहमत हो। यह सभी हज़रात हज़रतं अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बेटे थे। यानी यह सब बाहम भाई थे।

७. हज़रत अ़ली अकबर, ८. हज़रत अ़ब्दुल्लाह (जो अभी दूध पीते थे गोद में थे) उन पर अल्लाह की रहमत हो यह दोनों हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बेटे थे।

६. हज़रत अ़ब्दुल्लाह, १०. हज़रत क़ासिम, ११. हज़रत अबू बक्र, यह तीनों हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बेटे थे। इन सब पर अल्लाह की रहमत हो।

१२. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान, १३. हज़रत अ़ब्दुल्लाह, १४. हज़रत जाफ़र, यह तीनों हज़रत अ़कील बिन अबी तालिब के बेटे थे यानी हज़र हुसैन (रज़ि०) के चाचा के बेटे थे। इन सब पर अल्लाह की रहमत हो।

१५. हज़रत अ़ब्दुल्लाह यह हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन के चचा के पोते थे।

१६. हज़रत मुहम्मद यह अबू सईद बिन अक़ील के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन के चचा के पोते थे।

१७. हज़रत औन, १८. हज़रत मुहम्मद यह दोनों हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबीतालिब के बेटे थे यानी हज़रत हुसैन (रज़ि०) के सगे चचा के पोते थे।

हज़रत अ़क़ील के बेटे हज़रत मुस्लिम यानी हज़रत हुसैन के चचाज़ाद भाई पहले ही कूफ़ा में ८ ज़िल्हिज्जा (सन०६०) को शहीद कर दिये गये थे। अल्लाह तआ़ला इन सारे शुहदा पर अपनी रहमत की बारिश करे।

यह जो मशहूर है कि हज़रत मुस्लिम के साथ दो छोटे बच्चे औन व मुहम्मद थे जो कूफ़ा में शहीद हुए यह दोनों करबला के मैदान में शहीद हुए हैं।

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ख़ुद लिखता है–

"मेरी उमर का अधिकतर हिस्सा इसी अंग्रेज़ी हुकूमत की ताईद और हिमायत में गुज़रा है और मैंने जिहाद की मुमानिअ़त और अंग्रेजों की फ़रमाबरदारी के विषय में इतनी किताबें लिखी और इश्तिहार छापे हैं कि यदि वह रिसाले और किबातें इकट्ठा की जाएं तो पचास अलमारियां उनसे भर सकती हैं, मैंने ऐसी किताबों को तमाम अरब, मिस्र, शाम, काबुल और रोम तक पहुंचा दिया है।"

इसी प्रकार एक दूसरे स्थान पर लिखा है –

"मैं शुरू उम्र से इस वक़्त तक, जो लगभग ६० (साठ) साल की उम्र तक पहुंचा हूं, अपनी ज़बान और क़लम से इस अहम काम में लगा हुआ हूं, ताकि मुसलमानों के दिलों को ब्रिटिश हुकूमत की सच्ची महब्बत, ख़ैर ख़्वाही और हमदर्दी की ओर फेर दूं और उनके कुछ कम समझ लोगों के दिलों से ग़लत ख़याल 'जिहाद' आदि को दूर कर दूं जो उनकी दिली सफ़ाई और अच्छे सम्बन्ध बनाने से रोकते हैं।"

एक दूसरे स्थान पर अपना मक़सद इस प्रकार बयान करते हैं –

"मैंने बीसियों किताबें, अरबी, फ़ारसी और उर्दू में इस लिए लिखी हैं कि इस एहसानमन्द हुकूमत से हरगिज़ जिहाद दुरुस्त नहीं, बल्कि सच्चे दिल से फ़रमाबरदारी करना मुसलमान का फ़र्ज़ है, इस प्रकार मैंने यह किताबें एक बड़ी रक़म से छपवा कर इस्लामी देशों तक पहुंचाई हैं, और मैं जानता हूं कि इन किताबों का बहुत बड़ा प्रभाव इस हिन्दुस्तान पर भी पड़ा है और जो लोग मेरे साथ मुरीदी का सम्बन्ध रखते हैं वह इस हुकूमत की सच्ची ख़ैर ख्वाही से लबालब भरे होते हैं, उनकी अख़लाक़ी हालत ऊंचे दर्जे की होती है और मेरा विचार है कि वह पूरे देश के लिए बड़ी बरकत का ज़रिया हैं। और हुकूमत के लिए जान निछावर करने को तय्यार।

इस (क़ादियानी) की औलाद और उसके मुरीदों में से जिस–जिस ने इसके हालात पर क़लम उठाया उन सब ने इस विषय में उल्लेख करते हुए लिखा है कि यह व्यक्ति 'मिराक़ी' (अर्थात जुनून, भय शक, व सन्देह का शिकार) था। यहां यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि डाक्टरों के माहिरीन ने मर्ज़ मिराक़ (मालिखूलिया) के प्रभाव को इस प्रकार बयान किया है कि यह इन्सान के फ़िक्र व ख़यालात और अधिक मेहनत, व जिरयान या नाकामी की वजह से पैदा होता है और जिससे आदमी अपने आपको 'आलिमुलग़ैब' कहने लगता है और कुछ मरीज़ तो अपने आपको फ़िरिश्ता समझ बैठते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मिराक़ के मर्ज का असर उस शख़्स के विचारों में पूरी तरह दाखिल हो चुका था। यह बात उन ऐतिहासिक घटनाओं और क़ादियानी नुसूस (अस्ल) को देखकर अच्छी तरह समझ में आ जाती है। जिससे एक शख़्स के लिए यह फ़ैसला करना और इस नतीजे पर पहुंचना दुशवार होता है कि उसके यह झूटे दअ़वे इसी मर्ज़ (मालिखूलिया) का नतीजा थे या इस्लाम दुशमन की एक साज़िश ?

पहले तो उसने मुजद्दिदे ज़माना होने का दअ़वा किया, फिर महदियत का, फिर मसीहे मौऊद होने का एलान कर दिया, फिर यह एलान भी कर दिया कि मैं नबी हूं और यह भी कहलवाया कि जो मेरी नुबूवत का क़ाइल नहीं वह काफ़िर है।

क़ादियानियत एक फ़ित्ना है उससे दूर रहें।

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● सऊदी अरब के उत्तराधिकारी शाहज़ादा अब्दुलाह बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा है कि हुकूमत जनता की भलाई से ग़ाफिल नहीं। रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने, शासन को आधुनिक स्तर पर मज़बूत करने का प्रयास जारी रखा जाएगा। सभी लोग बिना किसी भेद भाव के दीन पर अमल करें। वह किंग फ़ोहद यूनिवर्सिटी देहरान पेट्रोलियम खनिज की चालिसवें शिलान्यास दिवस के औसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। इस औसर पर उन्होंने शाहज़ादा अब्दुल्लाह काम्पलेक्स औद्योगिक रिसर्च का शिलान्यास रखा और यूनिवर्सिटी छात्रावास के पांचवीं मंज़िल और भारी पिट्रोल को रिफाईन करने वाली टेक्नालोजी की प्रयोग शाला का उद्घाटन किया। इस औसर पर शाहज़ादा अब्दुल्लाह एडमिन्ट्रेशन में पी०एच०डी० की आनरेरी डिग्री दिये जाने पर शुक्रिया अदा किया और कहा कि अध्यापकों का कार्य क्षेत्र यूनिवर्सिटी के कमरों और प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं। सऊदी जनता उसकी रचनात्मक क्षमता और धर्म और राष्ट्र की सेवा की इच्छुक है। आप सभी समस्याओं के समाधान में उनकी सहायता करें।

● अमरीका भूतपूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर को ओसलो में शान्ति का नोबुल पुरस्कार दिया गया। उन्हें यह पुरस्कार १९८७ में इस्राईल और मिस्र के बीच शान्ति समझौता कराने पर दिया जा रहा है। उनकी आयु इस समय ७८ साल है और उन्हें यह पुरस्कार कैम्पडेविड समझौते के २४ साल बाद दिया गया। नोबुल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद अपने भाषण में जिमी कार्टर ने कहा कि युद्ध समस्याओं का हल नहीं। इससे तो अनेकों समस्याएं पैदा होती हैं। जिमी कार्टर, जो अमरीकी राष्ट्रपति बुश की इराक़ पालिसी के विरोधी हैं, कहा कि यदि अमरीका ने इराक़ पर हमला किया तो उसके भयंकर परिणाम निकलेंगे। उन्होंने कहा कि शक्तिशाली देशों को चाहिए कि वह ऐसी पालिसी अपनाएं जिससे युद्ध की रोकथाम हो सके और सुरक्षात्मक हमला करने के बारे में सिद्धान्तों पर अमल करें। उन्होंने इराक़ पर भी ज़ोर दिया कि वह विनाषकारी हथियारों की समाप्ति के लिए सुरक्षा परिषद के परस्ताओं पर अमल करें। उन्होंने कहा कि इस समय संसार में कम से कम ८ ऐटमी शक्तियां हैं और उनमें से तीन को अपने पड़ोसी से ही ख़तरे का सामान है । उन्होंने कहा कि दुन्या को शान्ति का क्षेत्र बनाने के लिए सब को ख़ास तौर से बड़ी शक्तियों को मिलजुल कर काम करना होगा।

● पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेट कप्तान और तहरीके इंसाफ़ के अध्यक्ष इमरान खान ने कहा है कि हम देश की ज़र्जर व्यवस्था समाप्त करना चाहते हैं। देश में क़ानूनी व्यवस्थता, अन्याय पूर्व शासकों की पैदा की हुई है। उन्होंने कहा हमारी तमाम पालिसीयों दूसरे देशों के अधीन हो चुकी हैं। जब तक देश से दमनकारी शासन का ख़त्मा नहीं होगा ग़रीबी, मंहगाई, बेरोज़गारी दूर नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि हमारी क़िस्मत के फ़ैसले इस्लामाबाद के बजाए वाशिंगटन में होते हैं। जिन लोगों ने क़ौम के अरबों रूपये हड़प किये, वह आज बाहर रहे हैं जबकि छोटे अपराध करने वाले ग़रीब लोगों को जेलों में रखा गया है।

● बी०बी०सी० लन्दन के न्यूज़ रीडर आसिफ़ जेलानी ने अमरीका की पक्षपाती पालिसी को बेनक़ाब करते हुए कहा कि सरकश इसराईल के सामने अमरीका बेबस क्यों है। एक स्वाल के जवाब में बताया कि अमरीका में यहूदी वोट शक्तिशली अमरीकी लाबी है। पूरी दुन्या में जितने यहूदी रहते हैं उनकी आधी संख्या अमरीका में आबाद है। अमरीका में २८ करोड़ कुल आबादी में यहूदियों की संख्या साठ लाख है उसी प्रकार ब्रिटेन में कुल यहूदियों की आबादी ४ लाख बताई जाती है और पिछले तीस साल से यही संख्या सुनने में आ रही है मगर इसके बावजूद स्थानी कौंसिलों और पार्लियामेंट के सदस्यों में यहूंदियों की संख्या बराबर बढ़ रही है। इसमें भी यहूदियों की एक साज़िश है ताकि दुश्मन सही संख्या न जानने पाए।

आसिफ़ जेलानी ने अमरीका की पक्षपात पालिसी को बेनिक़ाब करते हुए कहा कि अमरीका इस्राईल के बीच विशेष सम्बन्ध ा का प्रारम्भ दूसरे विश्व महायुद्ध के बाद से हुआ जब अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने १९४५ में फ़िलिस्तीन के विभाजन की योंजना पेश की थी जिसमें फ़िलिस्तीन के एक बड़े भाग पर इस्राईल राज्य स्थापना की योजना प्रस्तुत की गई थी और योरोशलम को संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में देने की बात कही गई थी। अमरीका दूसरे महायुद्ध के दौरान यूरोप में जो यहूदी बेघर हो गए थे उनमें से एक लाख यहूदियों की फिलिस्तीन में बसाना चाहता था। ब्रिटेन ने जिसकी निगरानी में फिलिस्तीन था, इसका विरोध किया था मगर यहूदियों ने जब एकतरफा तौर पर इस्राईली राज्य के स्थापना की घोषणा की और उसके आधे घंटे के बाद अमरीका ने इस राज्य को मान्यता दे दी, उस समय ब्रिटेन बल्कि पूरा संसार चकित रह गया। इसके बाद दो साल बाद अमरीकी दबाव में संयुक्त राष्ट्र के अनुसार फ़िलिस्तीन का विभाजन हुआ और इसराईल राज्य स्थापित हो गया। यही वह कारण थे कि अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन से लेकर अब तक हर अमरीकी राष्ट्रपति इसको अपना राज्य समझता है और गत पचास वर्षों में अमरीका ने इस्राईल को दो खरब डालर से भी अधिक की सहायता दे चुका है। एक सूचना के अनुसार इस्राईल की आधी से अधिक आबादी अमरीकी मूल या अमरीकी नागरिकता रखती है।